मूल्य रु. ५-००

# श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • सलंग अंक १५५ • मार्च २०२०

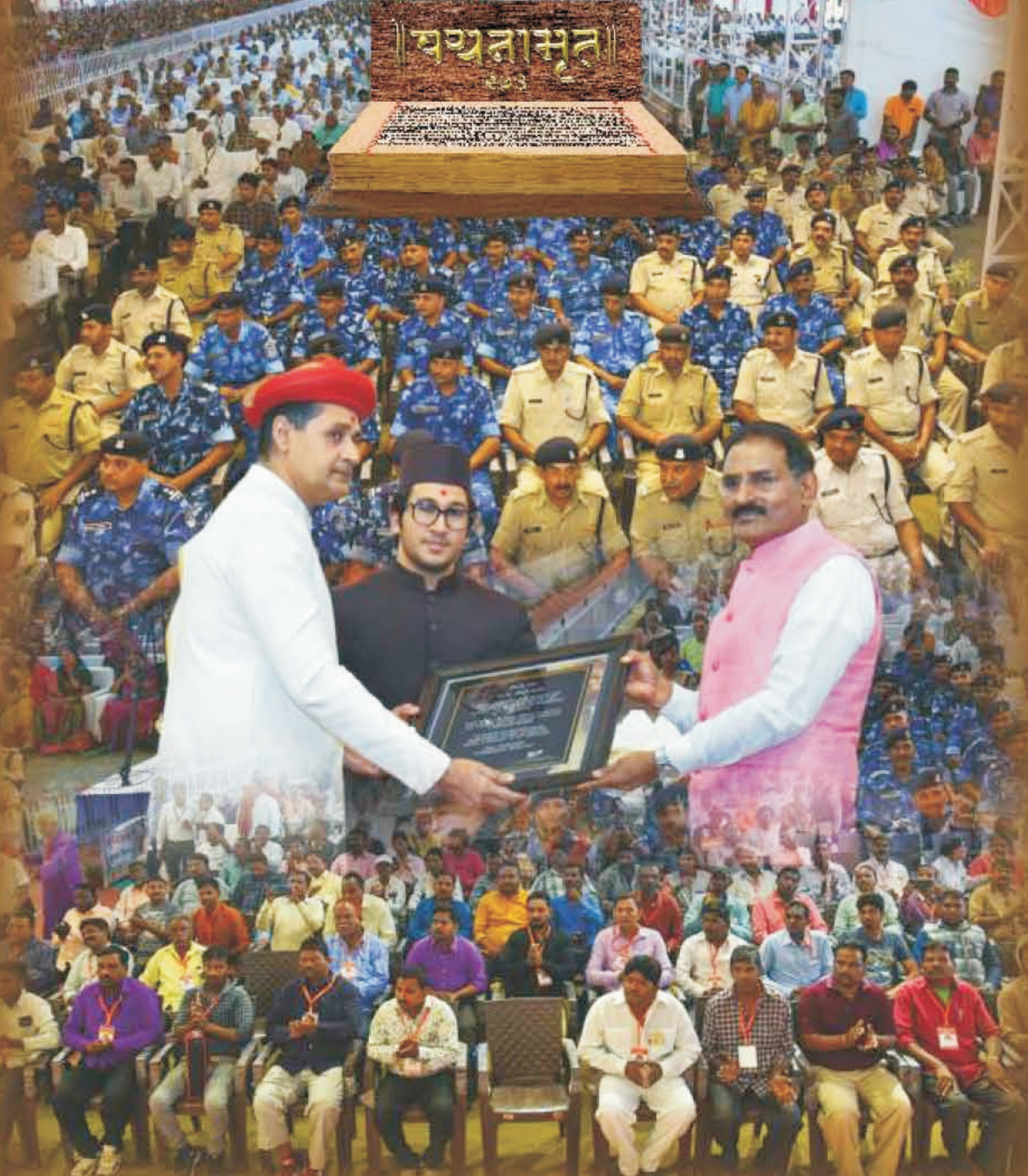


प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

# श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - १३ ● अंक : १५५
मार्च-२०२०

**संस्थापक**

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी ( महंत स्वामी )

**पत्र व्यवहार**

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ८२३८००१६६६
मो. ९०९९०९८९६९
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in
मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

## अ नु क्र म णि का

| | | |
|---|---|---|
| ०१. | अस्मदीयम् | ०४ |
| ०२. | प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा | ०५ |
| ०३. | ब्रह्ममुहूर्त | ०६ |
| ०४. | दीनानाथ हरिकृष्ण की जय | ०८ |
| ०५. | प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन | १० |
| ०६. | वचनामृत अर्थात् श्रीहरि के वचन रुपी अमृतका सागर | १३ |
| ०७. | श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा वचनामृत महोत्सव (२७३) भव्यता से मनाया गया | १९ |
| ०८. | श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से | २१ |
| ०९. | सत्संग बालवाटिका | २३ |
| १०. | भक्ति सुधा | २६ |
| ११. | सत्संग समाचार | २८ |

# अस्मदीयम्

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश के अर्न्तगत वचनामृत द्विशताब्दी महोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा आशीर्वाद से हमारे भविष्य के होने वाले आचार्य १०८ व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्ष पद भव्यता से मनाया गया था।

एक महीने जैसे संक्षिप्त समय में यह अद्वितीय आयोजन जो हुआ सबके लिये आश्चर्यजनक है। यहाँ पर सदैव श्रीहरि की उपस्थिति होने पर ही सम्भव है। प.पू. लालजी महाराजश्री के लिये यह कुछ नया नही बल्कि सहज स्वरुप में हे। उनको बचपन से भगवान श्री घनश्याम महाराज की तरह कई अवसर पर अनुभव मिले है। और देखे भी है। भगवान के पुत्र में क्या कमी आयेगी, श्री नरनारायणदेव देश में कई बड़े समारोह मनाये गये है। और मनाते रहे है। संत और हरिभक्त कंधे से कंधा मिलाकर एक सूत्रता से सेवा में लगे थे।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की रुचि, सूझ-बूझ कैसी है। कोई प्रचार-प्रसार नही न किसी प्रशंसा के लिये, सामान्य व्यक्ति का ध्यान रखना यह बड़े लोगो की महानता होती है। कोर्पोरेशन में काम करने वाले सफाई-कर्मचारियो का सम्मान करके उनकी प्रशंसा किये थे। जिससे उनके अन्दर जोश उमंग आये।

माँ और मातृभूमि की रक्षा करने वाले **CRPF** और **RAF** के सैनिको का सन्मान किये थे। इन दोनो के लिये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. महाराजश्री दोनो को इनसे प्रतिमान और गौरव है। ऐसे महामहोत्सव की फल श्रुति नही तो दूसरा और क्या हो सकता है।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

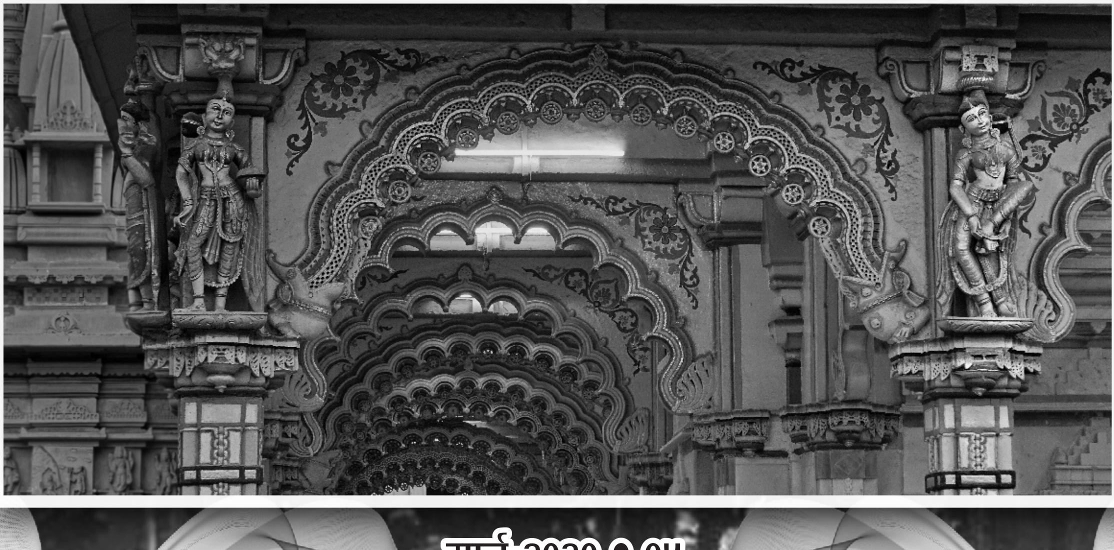

# प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(फरवरी-२०२०)

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर महिसा वासणा मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर आगमन।
२ श्री स्वामिनारायण मंदिर मनीपुरा मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर आगमन।
३ श्री स्वामिनारायण मंदिर धनसुरा पाटोत्सव पर आगमन।
४ श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा पाटोत्सव पर आगमन।
६ श्री स्वामिनारायण मंदिर करशनपुरा शताब्दी पाटोत्सव महोत्सव अवसर पर आगमन।
७ श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापूनगर १५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव अवसर पर आगमन।
८-९ श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी ( कच्छ ) आगमन।
१० श्री स्वामिनारायण मंदिर मेहसाना पाटोत्सव पर आगमन।
१२ राजपुर ( कडी ) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव के अवसर पर आगमन।
१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट पाटोत्सव पर आगमन।
१४ मोरबी श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव पर आगमन।
१५ विहार और प्रतापपुरा मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर आगमन।
१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर सापावाडा पाटोत्सव अपसर पर आगमन।
१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर भावपुरा और मोखासण पाटोत्सव के अवसर पर आगमन।
१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर कुबडथल के पाटोत्सव पर आगमन।
१९ धोलका मंदिर सत्संग सभा के अवसर पर आगमन।
२३-२६ श्री वचनामृत द्विशताब्दी महोत्सव और परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव महाभिषेक आदि अपने शुभ सानिध्य में पूर्ण किये।
२८ श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया पाटोतसव अवसर पर आगमन।

## प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(फरवरी-२०२०)

२ श्री स्वामिनारायण मंदिर ऊँझा और कुहा पाटोत्सव के अवसर पर आगमन।
३ श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापूनगर पंच दशाब्दी महोत्सव अवसर पर आगमन।
६ श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटडी में आगमन।
७ श्री स्वामिनारायण मंदिर मोखासण ३० वाँ ( भाई-बहनोका ) पर आगमन।
८ सोलैया गाँव में आगमन।
९ श्री स्वामिनारायण मंदिर विजापुर मे पाटोत्सव अवसर पर आगमन।
१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडा पाटोत्सव अवसर पर आगमन।
१३ आमजा श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव अवसर पर आगमन।
१५ सरढव गाँव में आगमन।
१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल में आगमन।
२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर गाँव में आगमन।
२३-२६ श्री वचनामृत द्विशताब्दी महामहोत्सव और परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का १९८ वाँ पाटोत्सव महोत्सव, अध्यक्षपद पर उल्लास पूर्वक पूर्ण हुआ।

# ब्रह्ममुहूर्त

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास ( जेतलपुरधाम )

अपने आराध्य देव श्री सहजानंद स्वामी महाराजने अपने हाथो द्वारा श्री शिक्षापत्री लिखे, उसमें चारो पुरुषार्थ की सिद्धि होती है । वे नियम-उपाय सभी शास्त्र के रुप में लिखे हैं . उसमें एक अद्‌भूत उपाय स्लोक नं. ४९ में ''हमारे सत्संगि को उसे नित्य सूर्योदय से पहले उठ जाना चाहिए । इस एक बचन में मनुष्य के जीवन के लिये उपयोगी अगणित विषय समाहित है ।

सूर्योदय के पूर्व वाले समय को ''ब्रह्ममुहूर्त'' शास्त्र में कहा गया है । इसकी जानकारी और उसके लाभ को हमारे ऋषिमुनिने अपने अभिप्रायः गहनता पूर्वक शास्त्रीय विधिमें वैज्ञानिक तथ्य के साथ दिये है । आज के दौड-भाग के समय में रोजगार के लिये रात-दिन सफलता की प्राप्ति के लिये कई संकटो का सामना करता है । और असफलता का सामना करना पडता है ।

''ब्रह्ममुहूर्त'' अर्थात् क्या ? दिन के २४ घंटे का ३० मुहूर्त ( होरा ) होता है । प्रत्येक मुहूर्त को ४८ मिनट का होता है । सूर्योदय से लेकर दूसरे दिन सूर्योदय तक प्रत्येक ४८ मिनट पर मुहूर्त बदल जाता है । उसमें से सूर्योदय से पूर्व दो मुहूर्त अर्थात् १६ मिनट का समय ''ब्रह्ममुहूर्त'' कहा जाता है । दक्षिणायन उत्तरायण के आधार पर दिन-रात के समयात्तराल लगभग देढ घंटा जैसा होता है । सूर्योदय के मानव समय से राज्य-देश के समयानुसार गणना की जाती है ।

ब्रह्ममुहूर्त में उठने का लाभ देखे तो ''ब्रह्ममुहूर्त'' अर्थात् ब्रह्म का समय, ब्रह्म अर्थात् परब्रह्म की दिव्य शक्ति मानव शरीर मुख्यतया पाँच तत्व और २४ आंशिक तत्व का बना होता है । इन तत्वो के मालिक देव या अधिष्ठाता शरीर में रहते है । सूर्योदय से पूर्व ब्रह्ममुहूर्त में पुन तत्वो के मालिक सूर्योदय के साथ पृथ्वी पर प्रगट होकर अपने तत्वो में अपनी शक्ति का संचार करते है । परमब्रह्म परमात्मा ने उन देवो को समस्त शरीरधारी को शक्ति प्रदान करने की जिम्मेदारी दिये है । इस लिये वे २४ घंटे में २ मुहूर्त पृथ्वी लोक में रहने वाले सभी देहधारियो में प्रगट होते है । मनुष्य जागृत अवस्था में हो उस पर भी जो ध्यान-भजन जैसे पवित्र कार्यो में लगा रहता है । ऐसे लोगो को ऊर्जा देते है । उसी प्रकार मानव के शरीर में ६ चक्र होते है । निद्रावस्था में निसक्रिय होते है । उस में पुनः शक्ति प्रदान करते है । उगले २४ घंटे तक, ऊर्जा का स्तर बना रहता है । शरीर में ७२ हजार नाडियाँ तथा ईडा - पिंगला-सुषुम्ना नाडियाँ अपने शक्ति से कार्य करने लगती है । जो मनुष्य ब्रह्ममुहूर्त में नही उठा रहता है । उसके पास से देवी-देवता शक्ति न देखर नाराज होकर चले जाते है । सूर्योदय के पूर्व सूर्य देव ऊर्जा की वर्षा करते है । उस समय जो व्यक्ति उठा रहता है । उसमें भी पूजा-पाठ, ध्यान करता है तो उसे विशेष ऊर्जा प्राप्त होती है । ब्रह्ममुहूर्त में सोने वाला व्यक्ति दैवी शक्तियों से वंचित हो जाता है । यह सकारात्मक ऊर्जा न प्राप्त करके नकारात्मक शक्ति का भागी बनता है । उसका प्रभाव आचार-विचार पर पडता है । शयन अवस्था में अन्तःकरण के देव निष्क्रिय होने के कारम शरीर के अंगो में विष भर जाता है । उनके ऊर्जा का संचार नित्य, मूत्र-मल और पसीने में बाहर निकल जाता है । ब्रह्ममुहूर्त में ब्रह्मरन्ध्र खुलते है । इस कारण से पूज्य देव एवम् देवियो का मिलन स्वयं हो जाता है । इस समय जप-तप-ध्यान

भजन करने पर सुलभता से पूज्य देव के पास जाता है। जैसे यज्ञ कुंड में जिन-जिन देवी की आहुति नाम सहित की जाती है । वे हविष देव स्वीकार अपने अनुसार स्वीकार करते है । उपाष्य को परमशक्ति स्वीकार करते है।

ब्रह्ममुहुर्त के 'अमृतवेला' के रुप में जाना जाता है। रात चार प्रहर की होती है । रौद्र प्रहर, राक्षस प्रहर, गंधर्व प्रहर मनोहर प्रहर, तीन-तीन घंटे का एक प्रहर होता है। सांझ के ६ से ९ का समय रौद्र प्रहर, ९ से १२ राक्षस प्रहर, १२ से ३ गंधर्व प्रहर, ३ से ६ मनोहर प्रहर । इसमें मनोहर प्रहर को अति पवित्र प्रहर माना जाता है। उसमें भी पूरे २४ घंटे में मात्र दो मुहूर्त के समय ब्रह्मरुंधका मुख खुला रहता है।इसके महत्व अधिक होता है।

ब्रह्ममुहुर्त के समय सूर्यदेव पृथ्वी के ३५° रेखांश पर प्रसार करता है । उस समय में सूर्यशक्ति पृथ्वी पर सीधे मानव के शरीर को प्रभावित करता है। उस समय मानव की आंतरिक शक्ति के साथ दिव्य तंतु का संम्बन्धहो सकता है । सूर्योदय के बाद सूर्य की शक्ति पृथ्वी पर या जड-चेतन पदार्थ के लिये उपयोगी अति तीव्र किरणे बनने के कारण मानव शरीर उसे सहन नही कर पाता है। उन तेज किरणो से पृथ्वी के जहरीले तत्व नष्ट होते है।और सृष्टि का पोषण होता है। मानव शरीर के लिये सूर्यशक्ति सूर्योदय से पूर्व १६ मिनट का समय २४ घंटे में से मिल सकता है।हमारी शरीर यदि सतो गुण प्रधान होती तो नींद स्वंय ब्रह्ममुहूर्ततक पूर्ण हो जाती है । यदि आप रजो - तमो गुण प्रधान होगे तो ब्रह्ममुहूर्त में उठना कष्टदायक होगा । हमारी शरीर किस गुण से प्रभावित है ज्ञान हो सकता है।

ब्रह्ममुहूर्त समय चन्द्र ग्रह के तरफ से पृथ्वी के उपर अमृत की वर्षा होती है। उससे अन्य ग्रहोकी दृष्टि अनुकुल होती है। ब्रह्ममुहूर्त के समय आसुरी शक्ति सुषुप्त हो जाती है। किसी ग्रह की वक्रदृष्टि का प्रभाव कम हो जाता है। तथा प्रभाव भी नही पडता है।

ब्रह्ममुहूर्त के समय स्नान करे 'उसे' ब्रह्म 'ब्रह्मस्नान' कहते है। उससे त्रिदोष वात, पित और कफ जैसे प्रकोप शातं होता है। ब्रह्ममुहूर्त में उठने से सौन्दर्य, लक्ष्मी, आयु आदि प्राप्त होता है। ब्रह्ममुहूर्त में खान-पान व्यर्थ वार्ता, मोबाईल, टी.वी. की बात छोड देना चाहिए।

इस समय हवा में ४२% आक्सीजन होता है। शेष समय २८% प्रतिशत से अधिक इस लिये शरीर में से कार्बन डाईआक्साईड निकल जाता है।

कई ऋषियों के मतानुसार सूर्योदय के पूर्व ४८ मिनट को विष्णु काल कहते है । यह काल विद्यार्थी के अध्ययन और स्मृति बुद्धि के लिये उत्तम माना जाता है।

इस प्रकार सूर्योदय से पहले उठ जाने से कई लाभ मिलता है । अपने ईष्टदेव के आज्ञा का पालन करने से विशेष कृपा मिलती है । ''रात में शीघ्र सोना जल्दी उठ जाने से बल-बुद्धि, धन, स्वस्थ शरीर प्राप्त होता है।''

# दीनानाथ हरिकृष्ण की जय

- शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी ( अमदावाद )

॥ अष्टपदी ॥

जय जय दीनानाथ हरिकृष्ण ॥ जय ॥( ध्रुवपद )
वचोमधुवदनदेहिसुखसदन । श्रावयतोऽधहार ।।हरि...१॥
गजगतिगमनं विधविधनमनम् । नौमि मुहुत्वारत्वातितार ।।हरि...२॥
वस मम भवने सदासंपदवने । जनयेशं जितमार ।।हरि...३॥
अशरणशरणे हृदरूचरणे । त्वयि मे भ्रमत्यतिपार ।।हरि...४॥
रूचिराणिधारय वसनानि वारय । कुमति मे वेदधार ।।हरि...५॥
हृतनिजशमलं तवकरकमलम् । शिरसि निघेहि जयकार ।।हरि...६॥
मदनमनोहरमृदुशिशिरोहर । तव मांशाधिनृसार ।।हरि...७॥
कृतमुनिसेवं कविवासुदेवम् । निकटं ते रक्षमोदार ।।हरि...८॥

॥ इति वासुदेवानन्दवर्णिविरचिताष्टपदी ॥

आदि सद्‌गुरु नैष्ठिक ब्रह्मचारी श्री वासुदेवानंद वर्णी अपने ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण की स्तुति प्रार्थना करते है। अष्टपदी में भावना व्यक्त करने के लिये सुंदर मधुर राग से गा सके। ऐसे लय बद्ध स्वरो में रचना किये थे। उसके भाव मय शब्द से पूर्ण है। उसका अर्त समझने का प्रयास करते है।

जय जय दीनानाथ हरिकृष्ण ॥ जय ॥( ध्रुवपद )
वचोमधुवदनदेहिसुखसदन। श्रावयतोऽधहार ।।हरि...१॥

हे हरिकृष्ण नामधारी मेरे ईष्टदेव परमब्रह्म परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण आप के दीन–दयालुता का सब जगह जय....जयकार हो रहा है। इस कारण से हमारे जैसे दीन के उपर आप की कृपा पाकर मधुरमय वचन को सुनकर आपके सुखदायी - कमलवत मुख का दर्शन करके हे परम सुख के निधिआप हमारे उपर दया करे। हे हरिकृष्ण परमात्मा आप तो गरीबो के उपर दया करने वाले है। इस कारण से हर जगह आप की जय...जयकार हो रही है।( १ )

गजगतिगमनं विधविधनमनम् । नौमि मुहुत्वारत्वातितार ।।हरि...२।।

संसार के अनन्त जीवो को अपना सर्वोपरी स्वरुप की पहचान कराके मोक्ष का भागी बनाने के लिये विचरण कर रहे है। आप के चलने का तरीका जैसे कोई मदमस्त गजराज चल रहा है। ऐसे निर्भिक चाल देखकर मनुष्य-स्वर्ग के देवता आप की दिव्य रुप को प्रणाम करते है। कोई साष्टांग प्रणाम कर रहा है। कोई दोनो हाथ जोडकर सिर झूकाये खडा है। बार-बार हाथ जोडकर वंदना कर रहा है। हे ईश्वर हमे इस कष्टदायक संसार से जन्म-मरण के क्रम से मुक्त बनाओ। हे हरिकृष्ण परमात्मा आप तो गरीबो के उपर दया करने वाले है। आप की सर्वत जय-जयकार हो रही है।( २ )

वस मम भवने सदासंपदवने। जनयेशं जितमार ।।हरि...३।।

इस संसार के जिस भी जीव का आप के साथ मिलन होता है। वे सभी दीनता से प्रार्थना करता है कि हे हरिकृष्ण प्रभु आप हमारे घर में निवास करें। मेरे अन्तःकरण में निवास करे जिससे मेरा हृदय धर्म, भक्ति, ज्ञान और वैराग्य के प्रति अग्रसर हो। उसका रक्षण हो। इस कारण से अविजेय काम, क्रोध, मद लोभ पराजित हो। हे जगत के मालिक हमारे उपर कृपा करें। हे हरिकृष्ण परमात्मा आप तो गरीबो के उपर दया करने वाले है। इस कारण से आप की चारो तरफ जय-जयकार हो रही है।( ३ )

अशरणशरणे हृदरूचरणे। त्वयि मे भ्रमत्यतिपार ।।हरि...४।।

संसार में जिसाक कोई नही है। ऐसे निराधार के आप आधार है। जिसके हृदय में आप के चरणो की भक्ति है। आप के कमलवत चरणो को अपने हृदय में स्मरण रखता है। उसके सभी भ्मर आप पर करके भयानक भव सागर से पार कर देते है। हे हरिकृष्ण परमात्मा आप तो गरीबो के उपर दया करने वाले है। आप का चारो तरफ जय-जयकार हो रहा है।( ४ )

रूचिराणिधारय वसनानि वारय। कुमति मे वेदधार ।।हरि...५।।

दर्शन करे वाले भक्तो के मन को खुश कर दे। ऐसे सुंदर वस्त्रो को धारण करके आप भक्तो के हृदय को शुद्ध करते है। मुझ में या आप के आश्रित मनुष्य के अन्दर व्याप्त कुबुद्धि और नास्तिकता आदि का नाश करके रक्षा करते है। हे हरिकृष्ण परमात्मा आप गरीबो के उपर दया करने वाले है। इस कारण से सभी जगह जय-जयकार हो रही है।( ५ )

हृतनिजशमलं तवकरकमलम्। शिरसि निधेहि जयकार ।।हरि...६।।

हे हरिकृष्ण परमात्मा आप के इस आश्रित के हृदय में से अन्तःशत्रुओं के रुप में जो बडे-बडे शूल जैसे है। उसका नाश करके आप के अभयदान देने वाले करकमलो को सिर के उपर रखिये। जिससे भयंकर शत्रु काम-क्रोधमद, मान, लोभ के उपर विजय प्राप्त कर सके। हे हरिकृष्ण परमात्मा आप तो गरीब लोगो के उपर दया करने वाले है। आप की सब जगह जय-जयकार हो रहा है।( ६ )

मदनमनोहरमृदुशिशिरोहर। तव मांशाधिनृसार ।।हरि...७।।

आप की मूर्ति ऐसी सुंदर है। जिसका दर्शन करने से हृदय में से काम का मद दूर हो जाता है। कामदेव कामद का दूर करे। मन को शुद्ध रखे ऐसा स्वरुप आप का स्वरुप है। कोमल तो इतना है कि शिशिर ऋतु के कोमल कमल के पत्ते जैसा दर्शन होने पर अंतर के शत्रु दूर हो जाते है। हमारे मानव जन्म के सार मोक्ष प्राप्ति में आप सहायक हो। हे हरिकृष्ण परमात्मा आप तो गरीब लोगो के उपर दया करने वाले है। आप की सब जगह जय-जयकार हो रहा है।( ७ )

कृतमुनिसेवं कविवासुदेवम्। निकटं ते रक्षमोदार ।।हरि...८।।

आप की इस दिव्य मूर्ति की सेवा बडे-बडे मुनि सिद्ध पुरुष कर रहे है। उस अद्‌भूत मूर्ति की सेवा का अवसर मुझे भी प्रदान करें। अर्थात् वासुदेवानंद वर्णी को भी ऐसी सेवा के लिये। आप अपने पास रखकर रक्षा करे। हे हरिकृष्ण परमात्मा आप तो गरीब लोगो के उपर दाय करने वाले है। आप की सब जगह जय-जयकार हो रहा है।( ८ )

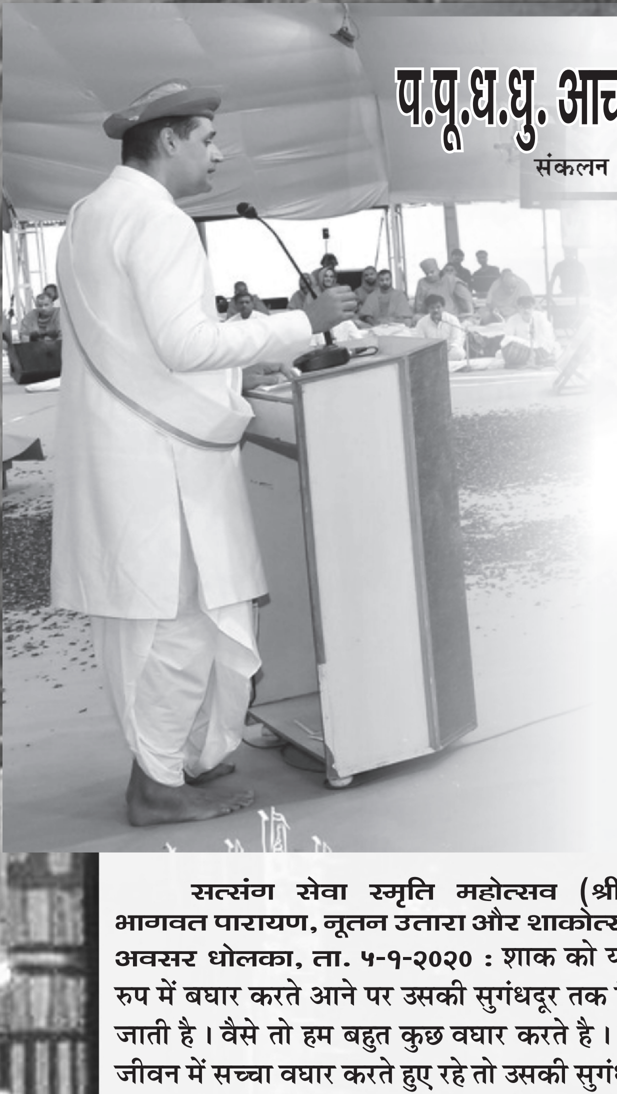

# प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा ( हीरावाडी-बापुनगर )

**सत्संग सेवा स्मृति महोत्सव (श्रीमद् भागवत पारायण, नूतन उतारा और शाकोत्सव) अवसर धोलका, ता. ५-१-२०२० :** शाक को योग्य रुप में बघार करते आने पर उसकी सुगंधदूर तक फैल जाती है। वैसे तो हम बहुत कुछ वघार करते है। यदि जीवन में सच्चा वघार करते हुए रहे तो उसकी सुगंधदूर तक फैलती है। मुरली मनोहर देव के सानिध्य में हम सब बैठे हुए है। इतिहास का ज्ञान होने पर दिव्य सुख की अनुभूति होती है। कष्ट यह है कि इतिहास में रुचि नही है। वोटस एप में रुचि अधिक है । **Good Morning......** को एक तरफ करें, महाराज ने कहा है कि इस तरह इतिहास, परम्परा को बचा सकते है। शाक रोटी तो हर जगह पर मिल ताजी है। लेकिन देव का सानिध्य हर जगह पर नही मिलता है।

इससे पहले हम बताये थे, फिर कह रहे है। म्युजियम में प्रसादी का पत्र है। पढियेगा, महाराज के अर्न्तध्यान होने के एक वर्ष पश्चात गोपालानंद स्वामीने शुकमुनि के पास से पत्र लिखवाये थे। आगे-पीछे का बताना नही है। उसमें वर्णित है कि धोलका में जो मूर्ति है, य हमहाराज के प्रसादी की मूर्ति है। विहारीलालजी महाराज के निर्णय में महाराज अर्न्तध्यान हुए। उसके तीन वर्ष पहले यह देव की प्रतिष्ठा का उल्लेख होता है। बडे लोगो को ज्ञात है।( मुरली मनोहर देव की प्रतिष्ठा वि.सं. १८८३ वैशाख वद-५, ता. १५-०५-१८२७ और महाराज की अर्न्तध्यान की तिथि वि.सं. १८८६ जेठ सुद-१० ता. ३०-६-१८३० ) जो हमे मिला है उसका मूल्य हमें नही है। यदि पता चल जाये तो नंद संत कहते है कि शीद होकर कंगाल रहे आज कल हम लोगो के पास मर्सीडीज गाडियाँ है। उस समय फटे गद्दे थे। एक विछौना रहा होगा। उस पर बैठकर लिखा होगा। भगवान मिले है भाग्य तो देखे। भगवान में क्या मिला ? दुकान, मकान, खेत, बाग, सब त्यागकर भगवान के साथ रहे। भगवान के खुशी में रहे। भगवान की सेवा में रहे। महाराज के साथ संत रहते थे। हरिभक्त, पार्षद, महाराज के पार्षद भगुजी के गाँव का नाम क्या है ? आप लोगो को ज्ञात है। आप गये है। आप को राजस्थान में कभी ले जायेगे। खाने की कोई व्यवस्था नही है। कल्पना तो करे, सब छोडकर प्रभु की सेवा में आये है। महाराज में कुछ तो देखा होगा। कल्पना करे। नंद संत क्यो दर्शन बना नही रह पाते थे। इतने प्रश्न का उत्तर मिल जाय तो कंठी, चांदला सर्व सार्थक है . नही तो माला फेरे, पूजा किये, जान छूटी ऐसा होता है।

यह २०२० का वर्ष है। इस आधुनिक काल में किसी के लिये कुछ करना पडे तो कितना सोचना पडता है। जब कि युग पर कोई प्रभाव नही पडता है। क्योंकि काले सिर वाले मनुष्य पर कोई असर नही होता है।

त्रेतायुग में हवन करते हुए ऋषियो के यज्ञ कुंड में असुर लोग हड्डी डाल देते थे । इसलिये रक्षा के लिये श्रीरामचन्द्र को ले गये थे । द्वापर युग में भी चलता रहा । आज कलियुग में भी यह दुःख दूसरे रुप में व्याप्त है । सतयुग, द्वापर, त्रेता और कलियुग में ये सब मन की अवस्था है । महाराजने वचनामृत में कहे है कि जीव के हृदय में जब जैसा गुण आये तब वैसे युग में क्रिया कलाप होता है । जब शुद्ध सात्विक गुण व्यहार में आये तब उसके हृदय में सतयुग की प्रवृत्ति होती है । अब आप अकेले तामसी गुण की प्रवृत्ति करते है । तब उसके हृदय में कलियुग की क्रिया प्रभावी बनती है । आज की बात कहे तो किसी को दिखाने के लिये नही शक्ति हृदय पूर्वक मंदिर की सीढीयाँ चढने का मन कहे तो यह आप के लिये पूर्णिमा है । दर्शन करने निकले और गिर जाये तो आप के लिये यह अमावस्या है । अन्तर इतना ही है । दूसरा कुछ नही है । नंद संत भगवान में जिस तरह मिल गये । ऐसी दृष्टि अपनी हो जाने पर तो भगवान के पीछे सहज रुप से प्रभावित हो जाते है ।

महाराजने शिक्षापत्री कब लिखे थे ? सत्संग में आने के बाद तत्काल लिखे थे ? तिलक चांदलो, कंठी कब आया ? कभी सोचे है ? विचार नही आयेगा ! क्योंकी हम लोग अधिक **Busi** है । डबला ( मोबाईल ) स्वास लेने दे तब न ? महाराज सत्संग में आये उसके २५ वर्ष के बाद शिक्षापत्री लिखी गई । तब तक क्या था ? क्या करते थे ? सत्संगी नही थे ? वचनामृत द्विशताब्दी हम मना रहे है । वचनामृत में प्रश्नोतरी है । महाराज बोले, प्रश्न पूछे, लेकिन बहुत कठिन प्रश्न ने पूछे । नींद आ रही हो और कहे प्रश्न पूछे । यह कठिन बात है । बुद्धि का उपयोग करने पर समझ आयेगे । लेकिन नंद संत संसार का सुख छोडकर काम किये । बिजली के तार को छूने पर आधात लगती है । यह अनुभव आधारित है । किसी के कहने पर न आये ।

शाकोत्सव में बडी संख्या में बहने रोटी बनाती है । कोई दूरी नही रखती है । कई लोगो के घर पर रसोईया भी होते है । आजकल दो से तीन हजार लगातार रोटी बनाने वाली मशीन भी है । इसके बाद भी चूल्हा पर रोटी बनाकर घी लगाकर प्रदान करती है । किस लिये ? उनकी भावना होती है । कि हमारे द्वारा बनाये गये रोटी को भगावन और भगवान के भक्त खायेगे । ऐसे महिमा से रोटी बनाती है । यह सेवा सामान्य नही है । यह सेवा और सत्संग आप है दूसरा क्या है ? भूतकाल नही है । वर्तमान है । लोग भूतकाल में किये है । अपने पास दंत कथा नही है । प्रत्यक्ष भगवान है । इस लिये आज एकठ्ठा हुए है । कई देशो से लोग इकठ्ठा हुए है । इस तरफ सोनी बैठे है । ठक्कर बैठे है । नाम आने पर ताली बजाने लगे । सभी विभाग यही पर है । वास्तव में आप सभी भगवान के भक्त है । उपर जाने पर कोई सोनी, ठक्कर नही होता है । भगवान के भक्त की महिमा भी है । अतिशयोक्ति में हमे विश्वास नही है । लेकिन आप जब भोजन करें । प्रथम नेवाला मुख में रखते ही १० सेकन्ड के लिये जो सिंहासन पर विराजमान है । उस भगवान के कारण हमें रोटी मिल रही है । अपने बुद्धि से नही मिलता है । मानव की क्षमता में भूल आ जाती है । बहने कभी दाल में नमक डालना भूल जाती है । हमें तो मात्र शिकायत करना है । कभी तिलक के बीच भाई लोग चाँदला करना भूल जाते है । हम कहते है आज इतने बजे उठे है । लेकिन कोई जगाता है । इस कारण से उठ जाते हैं । साँस देने वाला कोई है । यदि अपने हाथ की बात होती तो रात में साँस लेना भी बंदकर देते । प्रातःकाल अपने पडोशी आते कुछ खुश कुछ नाराज ( दुःखी ) होते । यही जीवन की सत्यता है । नींद देना, भोजन, देना, उठाना ये भगवान की कृपा है । शास्त्रो का सार है । कुछक्षण के लिये भगवान को स्वस्थ मन ही मन धन्यवाद कहे । ( दर्शन-पूजन-स्मरण ये आभार व्यक्त करने के रुप है । )

स्वामीजीने नूतन उतारा ( स्थळ ) अच्छा बनाया है । चले उपर देखे । हम बोले कुछ माह के बाद आयेगे । क्यो ? बनाने वाला तो बना दिया है । लेकिन देखने वाला कितना सम्भालता है । ये महत्वपूर्ण बात है । घर पर अपने विस्तर को कैसे मोड कर, तकिया व्यवस्थित रखते है । यहाँ से जाने के बाद दूसरा व्यक्ति भी भगवान का भक्त ही आने वाला है । यह ज्ञान की बात है । यह धर्म है । हम लोग वहाँ पर सब कुछ विखेर करके चले जाते है । मैं अपने बड़ाई के लिये नही कह रहा हूँ । दूसरे को सिखने के लिये कहता हूं। मेरा स्वयं का नियम है । जहाँ

पर हम रुकते है। वहाँ पर कम से कम कार्य छोड के जाता है। इससे अच्छा हो तो ठीक है। स्वच्छता अभियान तो अभी शुरु हुआ है। महाराजने हमे पहले ही सिखाये है। ये अपने लिये अच्छा है। अब पिचकारी जैसी गंदकी कम दिखाई देता है।

संतो एवम् आप सब की मेहनत है। जीवतचर्या करके हार पहनने से पूर्ण नही होता है। काम अभी अधिक बाकी है। हम महादेवजी और उनके सामने प्रसादी की जगह पर गये। उन्नती होगी। सत्संग का विकास और विस्तार हो उसमें अपना गौरव है। एक-एक हरिभक्त और संत को महाराजने समर्थवान बनाया है। फिर भी की भक्त आकर कहते है कि हमेशा यह नही होगा। संत गाँव में आते नही है। आप को पढने नही आता है? हम अपने आचरण से दो मनुष्य को सत्संगी क्यो नहीं बना सकते है। धन्य है इन बहनो का ८०% मंदिर उनके कारण है। बहने जहाँ पर गई सत्संग लेकर गई है। सत्य है कि नही ? बोले भी धक्का लगा कि नही ? सभा है, तैयार हो जाईये। बहने केवल रोटी ही नही बनाई ? संस्कार का सिंचन कीये है। इस कारण से मंदिर की सीढीयाँ पर चढ लेते है। इन सब का बड़ा योगदान है। इडर मंदिर का इतिहास देखे। मूली मंदिर का इतिहास पढे मूली के लिये रामाभाई राजा का नाम हो लेकिन जुडाव कही और जगह पर है।

हमारी परम्परा, संस्कार और धरोहर सुरक्षित रहे ये ही अपनी सच्ची पूँजी है। यह परम्परा किसी के पास नहीं है। ये मंदिर और मूर्तियाँ किसी के पास नही है। दूसरे किसी दुविद्या में नही पडना है। जैसे मूल परम्परा से अलग हो गये हो। वहाँ सब सही-सही हो। या गलत चल रहा है। कुछ मिला है तो खरीदकर मिला है। कहावतेँ धुम धुम के शून्य हो जाता है। उसकी कहानी वासुदेव स्वामी कहेगे। लेकिन भगवान विना छुटकारा है? हे माँ-पिता ! ऐसा हो तो भगवान के सामने माथा झूकाये बिना सम्भव नही है। मेरे आश्रित अन्न, धन, वस्त्र, इज्जत से दुःखी नही है। १५-१७ वर्ष के बालक हो जाने पर माता-पिता भी सुरक्षा नही लेते है। हम आप को बड़ा कर दिये है। एक उम्र से पहले विमावाले क्वविमा भी नही देते है। चालू होने पर निश्चित समय का हप्ता होता है। फिर नही, महाराज कहते है कि जब तक आप की शरीर है तब तक आप सुखी रहे। इसके बाद मेरे धाम में बोलिये ऐसा कोई गारंटी नही देगा। ये हमारे बाप की केवलं ताकत है। इस लिये गर्व रखे, अभिमान में रहें, कायर नही बने, कंगालन हो भगवान पर भरोसा रखे। और आप लोग रखे भी है। इतनी ही विनती है जब हो तब अवश्य दर्शन करे। तीन घंटे की माला करने के लिये नहीं कह रहे है। केवल दो मिनट के लिये आभार व्यक्त करने आईये। इनके द्वारा ही सब कुछ चल रहा है। हम आयेगे तो हमारे वच्चे सीढी चढेगे। ये भगवान अपने है। देव की निष्ठा कभी निष्फल नहीं जाती है। कोई कहता है अब पहले जैसा नहीं है। तब जाने उस पर कलियुग प्रभावी हो गया है। पहले जैसा आप में नही रहा। हमारे में तो है। अधिक है। किसी वस्तु की कमी नही है। धैर्य रखे, मर्दानगी रखे, देव की शक्ति वाला कभी पागल-भिखारी नही होता है। देव की कृपा विना अरबबति भी भिखारी जैसा है.

आप सभी ने देव का दर्शन किये। सेवा किये। पीछे का प्रांगण अच्छा हो गया निवास बनाये। सत्यसंकल्प स्वामीने मेहनत किया। अभी और कार्य करना है। होगा भी भगवान साथ है तो सब कुछ पूर्ण होगा ? ये देव आप के है। सत्संग में जाकर अच्छे विचार वाले बनना है। आप सभी चंदन है। चंदन का वृक्ष बबूल की तरह नही होता है। बबूल को बोना नही पडता है। झालावाड में जाये तो, भाल में जाये तो कई बबूल उगे रहते है। कोई ने लगाया ? चंदन होगा ? लगाकर देखे। चंदन की सुगंधअच्छी होती है। मैं उपदेश भाषण को नही मानता हूँ। धरोहर संतान को देगे तो बचा रहेगा। देव के होकर रहे, इसी में आनंद है। भटके नही नंद संतो के ये शब्द है। आप को विश्वास है कि आप को कुछ मिला है। आप कबसे तप कर रहे है। रोटी तो घर पर भी मिल जाये। इतना बोलकर सभी भक्तो को आशीर्वाद श्री प.पू. महाराजश्रीने दिया था।

# वचनामृत अर्थात् श्रीहरि के वचन रुपी अमृतका सागर

– गोरधनभाई वी. सीतापरा ( हीरावाडी-बापुनगर )

सर्वावतारी सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवानने इस पृथ्वी पर आकर जीवात्मा के कल्याण के लिये अनेक उपाय किये है। अनेक सुविधाये प्रदान किये है। श्रीहरि की मूर्ति या श्रीहरि के स्वरुपो का दर्शन कल्याणकारी है। श्रीहरि के चरणो से स्पर्शित भूमि, स्पर्शित रजकण, श्रीहरि के स्नान वाली नदियाँ, तालाब या कुआँ श्रीहरि के द्वारा स्पर्शित वस्तुयें जिस प्रकार जीवात्मा के कल्याण हेतु है। उसी प्रकार श्रीहरि के मुख कोमल से निकले प्रसादी भूत अमृत वचन जीवात्मा के लिये कल्याणकारी है। जैसे २७३ नदियाँ का जल एक जगह मिलने पर सागर बन जाता है। उसी प्रकार २७३ सभा में उच्चारित श्रीहरि के मुक कलम के बचनो का समूह ५ नंद संतो द्वारा संकलित श्रीहरि के वचनरुपी अमृत का सागर जिस प्रकार श्री कृष्ण के उपासक को ''भगवतगीता'' यह कृष्ण स्वरुप है। उसी प्रकार श्रीहरि के उपासको को लिये ''वचनामृत'' और ''शिक्षापत्री'' श्रीहरि का स्वरुप है। जिस प्रकार अमृत पान करने से मानव अमर हो जाता है। उसी प्रकार वचनामृत का पान करने से मनुष्य जन्म-मरण से रहित होक र परमकल्याण को प्राप्त होता है। सर्व अवतारो के अवतारी ऐसे श्री स्वामिनारायण भगवान के कमल रुपी मुख से अमृत वचन है। चार वेद और सभी शास्त्रो का सार अर्थात् वचनामृत है। वरामदे में अंधेरा हो लेकिन सूर्योदय होने पर खिडकी खोल देने से उजाला हो जाता है। उसी प्रकार मनुष्य के अंत:करण में अज्ञान रुपी अंधकार होता है। वचनामृत रुपी पेज को पढ लेने से अज्ञान रुपी अंधकार दूर हो जाता है। जीवन ज्ञान के प्रकाश से भर जाता है। श्रीहरि के वचन अर्थात् पूर्णविराम वचनामृत का ज्ञान जिस संत-भक्त में होता है। उससे शास्त्रार्थ में कोई व्यक्ति जीत नही सकता है। वचनामृत में क्या नही ? सब कुछ उदाहरण सहित है। सरल भाषा में है। कुछ विशेष वचनामृत विद्वान संतो के मुख से समझना पडता है नहि तो आँख में काजल होता है। उसे रगडने पर गाल काला हो जाता है। कई तो श्रीहरि स्थापित मूल सम्प्रदाय से अगल मनगढत कल्पित प्रणालिका चलाने के लिये वचनामृत के शब्दो का अलग अर्थ बता देते है। भोले लोगो को बताकर मोभ का अधिकारी बनाने के लिये राजी कर लेते है। उदाहरण स्वरुप सबसे पहला वचनामृत ( ग.प्र.प्र. १ ) खोले तो उसमें मुक्तानंद स्वामी का प्रश्न उसका उत्तर श्रीजी महाराजने स्पष्ट दिये है। धर्मकुल के आश्रित ऐसा जो भगवान का भक्त है। वह मरते समय भगवान की ईच्छा करके ब्रह्मया शरीर को प्राप्त करता है। यहाँ पर धर्मकुल अर्थ स्पष्ट है। श्रीहरिने अपने पिता धर्मदेव के कुल में त्यागी गृही सभी के गुरपद आचार्य पद स्थापन किये है। उस आचार्य के अन्दर दिक्षा लेकर उनकी आज्ञा में रहकर भजन-भक्ति तथा सत्संग की प्रवृत्ति करे उसे धर्मकुल का आश्रित होना कहते है। गुरु पम्परा बनाये रखने की बात श्रीहरिने श्री वडताल के १८ वे वचनाम-त में कहे है। लेकिन दूसरे लोग ऐसा कहेगे कि धर्मकुल अर्थात धर्म के नियम या धर्म का पालन करे वह धर्मकुल या धर्मवंशी है। इन खराब व्याख्यान में लोग अनुचित ही करते है। धर्म-धर्म तो सभी लोग कहते है। लेकिन धर्म में अधिक मर्म है। धर्मसुत के वचन यही परम धर्म है। धर्मसुत अर्थात् धर्मदेव के पुत्र श्री सहजानंद स्वामी द्वारा शिक्षापत्री में लिखे गये विधिऔर निषेधऐसा करना ऐसा नही करना। यदि हम मनन करेगे तो ज्ञान मिलेगा कि मूल सम्प्रदाय से विरक्त कोई भी शाखा शिक्षापत्री की मर्यादा में नही रहती है। चाहे शिक्षापत्री ले या सत्संगी जीवन ले प्रत्येक सम्प्रदायिक शास्त्र में गुरु पद पर धर्मवंशी आचार्य आयेगा। उसी प्रकार बहनो के गुरुपद पर आचार्यश्री की पत्नि प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री आयेगी।

वचनामृत एक ऐसा ग्रन्थ है कि जिस में भगवान का स्वरुप, भगवान का धाम, धर्म, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य के लक्षण, जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म और परमब्रह्म का उन्वय, भगवान का सकारावस्था, भगवान का महात्म, कर्ता भाव, अकर्ता भाव, सर्वोपरी, प्रगटीकरण, संतो की महिमा, संत के लक्षण, भगवान का ध्यान करने की विधि, आत्मनिष्ठा, नि,ठा का बल, उपासना, समाधि, सत्संग, कुसंग, एकान्तिक भक्त के लक्षण, निश्चय, समाधी, भगवान की मानसिक पूजा, एकादशी आदि व्रत करके की विधि, पुरुष प्रयत्न को भगवत कृपा मुक्त के भेद, मोह का स्वरुप, भगवान तथा भगवान के भक्त की सेवा का फल, द्रोह का फल, सत्पुरुष की कृपा, तथा क्रोधका फल, श्रीहरि के सर्वावतारी रुप को समझने का फल, श्रीहरि को अखंड याद रखने का फल, सत्संग का महत्व, स्वभाव तथा वासना, भगवान की मूर्ति का सुख, सही आहार-विहार तथा खगोल-भूगोल इन सभी के बारे में प्रश्नोतरी के रुप में संग्रह कर लिया गया है।

ये वचनामृत ग्रन्थ श्रीहरि के स्वरुप होने से इसमें संख्या कोई बदले, शब्द, वाक्य बदले तो उनको मूर्ति खँडित का पाप लगेगा। खंडित मूर्ति पूजा में नही रखते ऐशा शास्त्र एवम् ज्ञानी लोग कहते है। ऐसा विधान है। इस कारण से श्रीहरि समकालीन वचनामृत की मूल प्रत में छेडछाड करके अलग प्रकाशित करना वह मूर्ति खंडित के समान है। शास्त्रानुसार अच्छे वस्तु को ग्रहण करे। श्रीहरि के मुख से निकले वचन तथा उसको संपादन संकलन करने के लिये स्वयं श्रीहरि ने पाँच बडे नंद सती नियुक्ति किये। उस वचन में हमेशा अमृत भरा रहता है। उसे वचन विष बताकर मूलप्रत से अलग-नही करना चाहिए। वचनामृत के संग्रहकर्ता पांच सद्गुरु उसमें से प्रथम स.गु. ब्रह्मानंद कोई नही निकाल सकता है। ब्रह्मानंद स्वामी का नाम प्राचीन प्रत में है। शास्त्र तथा संसार में प्रसिद्धि है कि पाँच लोगो के समहू को पंच कहा जाता है। उसे सभा परिषद शब्द से भी परिभाषित करते है। किसी बात के समर्थन के लिये पाँच व्यक्तियो का नाम दिया जाता है। तो श्रीजी महाराजश्री भी अपने वचनो को संग्रह करने के लिये पाँच लोगो को नियुक्त किये होगे कि नही ऐसे पाँच अग्रगण्य संतो में ब्रह्मानंद स्वामी भी अवश्य होगे। इसमें कोई दो मत नही है।

अर्थात् संग्रहकर्ता में से स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी का नाम निकाल देना यह एक अज्ञानता है। श्रीहरि की ईच्छा के विपरीत है। उससे दोष निद्र होता है।

वचनामृत में जीवात्मा के कल्याण हेतु सब कुछ है। उसमें एक विषय ऐसा है कि उसको समझने में यदि कमी रह जाय तो कल्याण में उसकी हो कमी होगी। यह विषय यह है कि श्रीहरिने सर्वप्रथम अपने हाथ से स्थापित श्री नरनारायणदेव ये स्वयं श्रीहरि स्वयं है। दोनो में लेश मात्र अन्तर नही है। यह बात यदि वचनामृत में से न समझ में आये तो इ.स. २००४ में प.पू. बड़े महाराजश्रीने स्वहस्त लिखित पुस्तिका ''वचनामृत में श्री नरनारायणदेव'' इसका गहनता से अध्ययन करके मालूम होगा। इससे समझ में बदलाव आयेगा।

सागर जल से परिपूर्ण हो तो उसमें से चाहे पशु, पक्षी या मानव की जितनी क्षमता हो उतना पानी पी सकता है। सागर तो अगाधरहता है। उसमें से जलरंचमात्र भी कम नही होता है। उसी प्रकार प्रगट पुरुषोत्तम नारायण भगवान की यह वाणी रुपी अमृत पाज अपनी क्षमतानुसार करे उतना ही ज्ञान आयेगा। फिर भी वचनामृत अगाधरहेगा। अहमदाबाद और वडताल दोनो देशो में वचनामृत द्विशताब्दी महोत्सव के माध्यम से हजारो मुमुक्षुओ का कल्याण हुआ। बाद में भी इसी तरह श्रीहरि की यह अमृतवाणी लाखो करोडो का कल्याण करे। ऐसे नरनारायणदेव के चरणो की वंदना करते है। किसी देश के प्रमुख की आवाज सुनने के लिये लाखो लोग तैयार रहते है।

वचनामृत तो श्री स्वामिनारायम भगवान की परावाणी अर्थात् जिसकी सीमा न हो। ये अमृतवचन हम सभी के जीवन में प्रकाश भर दे। ऐसी श्रीहरि के चरणो में प्रार्थना है।

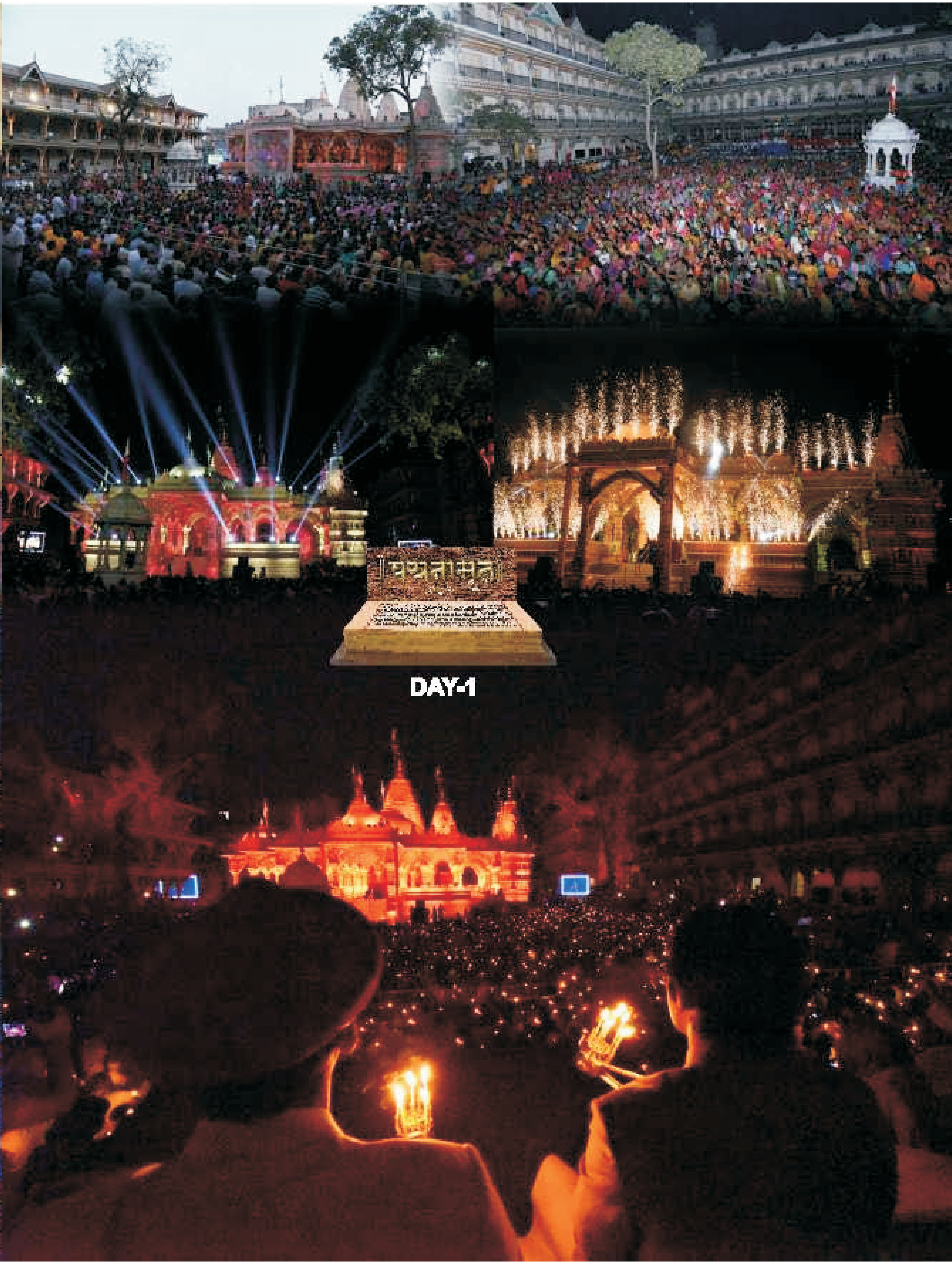
DAY-1

DAY-2

DAY-3

DAY-4

# श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा वचनामृत महोत्सव (२७३) भव्यता से मनाया गया

– गोरधनभाई वी. सीतापरा ( हीरावाडी-बापुनगर )

श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण की परावाणी स्वरुप वचनामृत ग्रंथ को २०० वर्ष पूर्ण होने पर भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री की प्रेरणा, मार्गदर्शन और उनके अध्यक्ष पद से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के आयोजन से श्री नरनारायण नगर ( पारस नगर - भूयंगदेव ) के विशाल परिसर में समग्र धर्मकुल परिवार के सानिध्य में अडमदाबाद वचनामृत की तिथि के अनुलक्षी ता. २३-२-२०२० से २६-२-२०२० तक वचनामृत द्विशताब्दी महोत्सव अद्वितीय रुप से मनाया गया ।

प्रथम दिन शायं के ७-०० से ८-३० तक निजमंदिर में जहाँ पर श्रीहरि वचन कहे थे । उस प्रसादी की वेदिका पर प्रसादी का वचनामृत ग्रंथ रखकर पूजा किये । लेसर शो, लाईट और साउन्ड शो, आतिश बाजी तथा समूह आरती की गई थी । इस अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री द्वारा तैयार किये गये । ''सीख'' नाम का एक सीरियल ट्रेलर में शिक्षापत्री, सत्संगिजीवन आदि शास्त्रो में उपदेशित बोधजीवन जीने की बात बताता है । उसे **LED** के माध्यम से लाँन्च किया गाय था । साथ ही साथ विद्यार्थी सत-भक्त द्वारा उच्चारित वचनामृत के बारे में **LED** के माध्यम से सुनकर लाभ प्राप्त किये ।

दूसरे-तीसरे और चौथे दिन शाम को ४-०० से ७-०० बचे तक शुरु में वचनामृत का उल्लेख गाने-कीर्तन किये गये । इसके बाद अहमदाबाद, जेतलपुर, मूली, धोलका, दंढाव्य प्रत्येक प्रांत के विद्वानो को संत हरिभक्तो को १५ मिनट के समय मर्यादा में अलग-अलग वचनामृत पर विवेचन द्वारा व्याख्यानमाला की गई है । साथ ही साथ भूज, गढडा इत्यादि देस से आये विद्वान ब्रह्मनिष्ठ संत-महंत की प्रासंगिक उद्बोधन रुप अमृतवाणी को स्वीकृत कर लिया गाय था । इस अवसर पर तीर्थो से सांख्ययोगी माता भी बडी संख्या में आये थे ।

दूसरे दिन विशेष में प.पू. महाराजश्री प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ मुख्य यजमान और बड़े संत द्वारा २,२२,२२२ जितने वसंत ऋतु में खीले ताजे सुगंधित कोलम तुलसी पत्र से प्रसादी भूत वचनामृत ग्रंथ के वेदमंत्रो के गान के साथ पूजन किया गया था । तथा ५१ जितने विद्वान भूदेव सारस्वत पंडितो का सन्मान किया गया । रात में प्रसिद्ध कलाकार, श्री खीमजी भरडा तथा नरनरायणदेव युवक मंडल द्वारा भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया। कला रसिक श्री सर्वभ पटेल रेत चित्र कला का अद्‌भूत दर्शन कराके सभी को खुश किये ।

तीसरे दिन दोपहर में १२-३० से ३-१५ तक वचनामृत समूह महापूजा बेडा आयोजन किया गया था । जिस में १००८ यजमानो सपत्नि सहित बैठकर पूजा करके धन्य हुए । इस दिन इष्टदेव श्रीहरि तथा आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के साथ कवचनामृत संग्रहकर्ता पांच नंद संतो का फूल माला के साथ भाव पूजन किया गया था । राष्ट्रप्रेम के भाग रुप में २०० जितने **CRPF** तथा **RAF (Rapid Action Force)** के जवानो का सन्मान करके राष्ट्रगत का गायन किये थे । जवानो के साथ आये श्री जादव साहब ( आई.जी. ) और प.पू. महाराजश्रीने अन्य लोगो को स्मृति भेट देकर परस्पर अभिवादन किये । श्री जादव साहब पुलवामा में आतंकी हुला में शहीद हुए भारत माता के सपुत के परिवार के साथ राहत फंड में उतस समय कालुपुर मंदिर द्वारा प.पू. महाराजश्री के हाथो द्वारा अर्पित रुपया १७,००,०००/- का अनुदान को याद किये थे । समाज के प्रेम से हमारे जवानो की ईच्छआ शक्ति बढ जाती है । प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा तथा उनके पू. श्रीराजा का शुभ सानिध्य में रात्र में महिला मंडल द्वारा संस्कारो का सिंचन सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया ।

चौथे दिन प्रातः श्रीहरि के तीन स्वरुपो का हाथ से श्री नरनारायणादिक देवो का अभिषेक और अन्नकूट की आरती की गयी । हजारो की संख्या में भक्तजन दर्शन करके धन्य हुए । पाटोत्सव के यजमान प.भ. श्री घनश्यामभाई ठक्कर परिवार धर्मकुल का पूजन-अर्चन करके धर्मकुल के हाथो से सम्मानित किये गये । दोपहर के बाद, शहर को स्वच्छ रखने में बडा योगदान है । ऐसे अहमदाबाद म्यु. कार्यो के २५० जितने सफाई-कर्मचारी का सन्मान किया गया । साथ में भोजन प्रसाद लोग किये । शिक्षापत्री में स्वच्छता के बारे में श्लोक को उजागर करके एक नई शुरुआत की गयी । महोत्सव के मुख्य यजमान अ.नि. प्रहलादभाई पूंजाभाई पटेल परिवार, प.भ. श्री तुषारभाई दशरथभाई पटेल परिवार तथा अन्य सेवा के यशस्वी यजमानश्री का सन्मान किया गया । महोत्सव के स्मृति रुप प्रत्येक यजमानश्रीने वचनामृत ग्रंथ दिया गया है । स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी ( कोटेश्वर ) अच्छे रुप में सभा का संचालन किये थे । चारो दिन प्रत्येक भक्तगण के लिये मिठाई के साथ भोजन का प्रसाद था । प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री सहित १०९ रक्तदाता **GCRI (Gujarat Canser Research Institute)** ने रक्तदान किये थे । मानव सेवा की उत्तम सेवा की गयी । समय के साथ धर्मकुल के परिवार ने सभा को आशीर्वाद दिये । पूरा महोत्सव टी.वी. चैनल के माध्यम से लाईव प्रसारण किया गया था ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के प्रगतिशील सुझ से संतो, महंतो के सहयोग से तथा निष्ठावान युवक के अथग परिश्रण से मात्र एक महिना की तैयारी मे महोत्सव **Short & Sweet** ( छोटा और मधुर ) यह कार्यक्रम अविस्मरणीय रहा था । स्वयं सेवको पर खुशी और आशीर्वाद प्रदान किये । प.पू. लालजी महाराजश्रीने म्युजियम में स्नेह-मिलन में युवको तथा समितियो के सदस्यो को सराहा गया था ।

**श्री स्वामिनारायण पत्रिका प्रकाशन की मालिकी के सन्दर्भ में ।**

**From-IV (see Rule : 8)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| १. | प्रकाशक | : | श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१ |
| २. | प्रकाशन समय | : | प्रति मास |
| ३. | मुद्रक का नाम | : | महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी |
| | राष्ट्रियता | : | हिन्दी |
| | पता | : | श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१ |
| ४. | संपादक का नाम | : | महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी |
| | राष्ट्रियता | : | हिन्दी |
| | पता | : | श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१ |
| ५. | मालिक | : | श्री नरनारायणदेव गादी के अधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री |
| | राष्ट्रियता | : | हिन्दी |
| | पता | : | श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१ |

मैं शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी यह स्पष्ट कर रहा हूं कि ऊपर दी गई बातें मेरी जानकारी और समझ के अनुसार सत्य है ।

हस्ताक्षर : शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी, महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर,
अहमदाबाद-१ ( प्रकाशक की साईन )

# श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

''वचनामृत'' अर्थात् आत्मा और परमात्मा के बीच का संवाद ''वचनामृत'' अर्थात् जीव, ईश्वर और माया को समझने की चाभी, ''वचनामृत'' अर्थात् जीवन के लिये पथ दर्शक, ''वचनामृत'' अर्थात् अशिक्षित मनुष्य के लिये सरल और ज्ञानी के लिये समझना कठिन है ।

श्रीजी महाराज अहमदाबाद, जेतलपुर, असलाली, वडताल, गढपुर, लोया, कारीयाणी, पंचाला और सारंगपुरधाम के संत हरिभक्तो के साथ प्रश्नोतरी करके अपने पाँच नंदो ने संकलित करके हम लोगो को २७३ अमृतरुपी वचनामृत को भेट किये है । श्री स्वामिनारायण म्यूजियम मे होल नं. २ में वचनामृत की मूल हस्त लिखित प्रत का दर्शन होता है । और साथ ही साथ वचनामृत की सभा का डायरा भी बनाये है । ऐसे दिव्य वचनामृत के २०० वर्ष का उत्सव हाल में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा भव्यता से मनाया गया था ।

– प्रफुल खरसाणी

## श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि-फरवरी-२०२०

| | |
|---|---|
| दि. ०२-०२-२०२० | श्री स्वामिनारायण मंदिर वणझर ( नया ) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर - पुराणी स्वामी ध्यानप्रियदासजी - सत्संग समाज |
| दि. ०३-०२-२०२० | जयंतीभाई लालजीभाई पटेल - मेमनगर |
| दि. ०७-०२-२०२० | ( प्रातः ) रमेशभाई रामजीभाई पटेल - उझा वाले हाल में यु.एस.ए. |
| दि. ०७-०२-२०२० | ( शायं ) संगीताबेन परेशभाई पटेल - कुंडलवाले |
| दि. १६-०२-२०२० | शोभनाबेन अमितबाई - यु.एस.ए. |
| दि. २६-०२-२०२० | जनकभाई गोकलदास पटेल - सेटेलाईट ( लवारपुरवाले ) श्री स्वामिनारायण म्युजियम के ९ वें वार्षिक दिन हेतु नीताबेन पटेल तथा पार्थ पटेल |

## श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-फरवरी-२०२०

| | |
|---|---|
| रु. ५,०००/- | शिवम और राधा के विवाह के अवसर पर १४-२-२० प्रविणभाई ठाकर - अहमदाबाद |
| रु. ५,०००/- | अ.सौ. लीलाबेन प्रहलादभाई पटेल - यु.एस.ए. श्री स्वामिनारायण म्युजियम के ९ वें वार्षिक दिन के लिए |
| रु. ५,१२१/- | अ.नि. मणीलाल लक्ष्मीचंद भालजा साहब के याद में वार्षिक तिथि प्रबोधआरीवाला तथा डॉ. निकुंज आरीवाला। |
| रु. ५,१११/- | डॉ. निकुंज तथा डॉ. धारा ( ओच्छव मंडल-कालुपुर ) सुपुत्र हर्ष के ९ वें जन्म दिन पर। |
| रु. ११,०००/- | प.पू. लक्ष्मीस्वरुपा बड़े गादीवालाश्री को श्री स्वामिनारायण म्युजियम में ९ वें वार्षिक के चरण भेट हेतु |
| रु. ५,०००/- | मंजुलाबेन नगीनदास भावसार - नारणपुरा - श्री स्वामिनारायण म्युजमयम के अभिषेक संकल्प हेतु। |

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

# सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

## मोक्ष प्राप्तिका बडा तीर्थ

– शास्त्री हरिप्रियदासजी ( गांधीनगर )

बात उस समय की है जब स्वामिनारायण भगवान को अहमदाबाद में प्रवेश की निषिध्धि का आदेश देने वाले पेशवा की सत्ता चली गई और अंग्रेज की सत्ता स्थापित हुई थी । उस समय भद्र के किले में अंग्रेजोने अपनी कार्यालय बना रखा था । एन्ड्रुय डनलप नाम के कलेक्टर कार्यालय में बैठकर संचालन करते थे । एक दिन उनके कान में मधुर आवाज सुनाई दी । ''नारायण हरे, सच्चिादनंद प्रभो'' वह अपने लिपिक को बुालकर पूछे ऐसे मधुर शब्द कौन बोल रहा है ? किस लिये बोल रहा है ।

ईर्ष्यालु मोतीराव बात हटाने के उद्देश्य से उत्तर दिये । साहब ! जाने दे ये तो स्वामिनारायण के साधु भिक्षा माँगने के लिये बोलते है । साहब बोले फिर भी ये शब्द मधुर है ? उस साधु को बुलाये । आदेश का पालन मोतीरावने पूरा किया । मुक्तानंद स्वामी और संतो की शांत आकृति तथा सौम्य भेषभूषा देखकर कलेक्टर के अन्तरमन में शांति का अंकुर फूटने लगा । ''शांति प्रदान करे उसे संत कहते है ।''

कलेक्टर साहबने स्वामी से प्रश्न किये । आप कहाँ रहते है । क्या क्रिया कलाप करते है ? आपका गुरु कौन है ? स्वामी विन्रमहतापूर्वक कलेक्टर साहब के प्रश्नो का उत्तर दिये । कलेक्टरने पुनः प्रश्न पूछा कि आप के गुरु कहाँ रहते है ? वो अहमदाबाद क्यो नही आते है ? स्वामीजी कहे ''हमारे गुरु स्वामिनारायण भगवान गाँव-गाँव धुमते है . अधमो का उद्धार करते है । अहमदाबाद कई बार आये है । लेकिन कुछ समय पहले पेशवाने अहमदाबाद आने से मना कर दिये है । इस कारण से नही आते है ।

कलेक्टर साहब स्वामीजी की बात सुनकर मुक्तानंद स्वामी से बोले कि स्वामिनारायण भगवान अहमदाबाद अवश्य आये । स्वामीजी बोले मैं अवश्य आप की बात उनसे कहूँगा ।

कलेक्टर ने स्वामिनारायण भगवान को अहमदाबाद मे बुलाये है यह सुनकर मोतीराव के पेट में दर्द होने लगा । पेशवा के मनाई का आदेश चालू रहे इसके बारे में मोतीराव सोचने लगे थे । उन्हे स्वामिनारायण से यह तकलीफ थी कि उनके सम्पर्क में आने वाले लोग माँस, मदिरा, चोरी, अनीति का त्याग करने लगे थे ।

एक दिन मौका देखकर मोतीराव कलेक्टर साहब से बोले कि आप स्वामिनारायण को पुनः वापस आने के लिये कहे है । उस विषय पर पुनः विचार क ले क्योंकि स्वामिनारायण की वाणी में जादूगरी है । इनकी बात सुनकर कई आदमी अपनी पत्नी तथा धन-सम्पत्ति घर द्वार का परित्याग कर दिये है । तथा जीवन पर्यन्त साधु बनने की प्रतिज्ञा ले लेते है । मोतीराव की यह बात साहब के मन पर प्रभाव डाल दी । संसार, सम्पत्ति, सुंदरी का त्याग करे वह व्यक्ति त्रिलोक विजेता बनता है । ऐसी बात सुनकर मनुष्य त्याग कर दे । ऐसे त्याग की अद्भूत शक्ति आये तो वह प्रभु कैसे अलौकिक होगे । ये आयेगे तो में उनके दर्शन से धन्य हो जाऊँगा ।

पहले प्रयास से मोतीराव असफल हुए । लेकिन राव हार माने ऐसे नही ते । दूसार अवसर आने पर एक दिन मोतीराव बोले स्वामिनारायण तो अपने साथ जवान, ताकतवर लडाकू काठियों की सेना रखते है । जिससे अपने राज्य की शांति भंग होगी । यह बात सुनकर कलेक्टर शंका किये, फिर भी बोले आने के बाद निर्णय करेगे ।

महाराजने गढपुर से संत, हरिभक्त और काठी पार्षद सहित जेतलपुर आये । जेतलपुर की बात अति न्यारी है । पवित्रता में नैमिषारण्य, रमणीयता में वृंदावन, दिव्यता में बद्रीधाम सुंदरता में श्वेतद्वीप को कमकर दे । ऐसे परमधाम रुप जेतलपुरधाममें आकर आराम किये ।

प्रभुने जेतलपुर में आधारानंद स्वामी के पास स्थल प्रसंग का वर्णन करके एक चित्र तैयार कराये । वह पार्षद भगुजी को दिये थे ।

जेतलपुर से विदा होकर जयजयकार सहित प्रभु अहमदाबाद आ रहे है । रास्ते में चंडोला तालाब आया । प्रभु एक पेड के नीचे बैठ गये । कलेक्टर को ज्ञात होने पर मोतीराव की बात की तुष्टि के लिये दो-चार अंगरक्षक के साथ वहाँ गये । हथियारधारी काठी पार्षदो के समूह को देखकर कलेक्टर आश्चर्य में पड गये । प्रभु बोले, क्यो आश्चर्य कित हो रहे है । कलेक्टर पूर्ण भाव से मन में शंका वाली बात कहे । तब श्रीहरि अति विनम्र भाव से कहने लगे ।

''आप को शंका हुई फिर भी एक बात जानकर आप को खुशी मिलेगी कि हमारे पार्षद जो हथियार साथ मे रखे है । ये हिंसक नही है । इनके हथियार दयाभाव से पूर्ण है । क्षमा करना हमारा धर्म है । लेकिन संतो एवम् साधुपुरुषो की रक्षा हेतु सर्प की फूफकार रखना आवश्यक है । न्याय के लिये यह हथियार हमारे पार्षदो के पास है । प्रभु की यह बात सुनकर कलेक्टर साहब का मन निर्मल और शांत हुआ ।

बाद में कलेक्टर साहब बोले ''आप को देखकर हमे अपनी युवावस्था का एक प्रसंग याद आ गया'' मैं जंगल में शिकार करने गया था । वहाँ पर शेर के हमले से कोई दिव्य आकृति मुझे उपर उठाकर मेरे प्राण की रक्षा किये थे । वह आकृति आप की है ऐसा प्रतीत हो रहा है । श्रीहरि मंद हास्य के साथ भगुजी के द्वारा बनाये गये चित्र को कलेक्टर साहब के हाथ में दिये । कलेक्टर के अर्न्तमन में अपार आनंद आया । स्वामिनारायण साक्षात् परमात्मा है । उन्हें विश्वास हो गया । कलेक्टर प्रभु के चरणो में झुक गये ।

इसके बाद स्वामिनारायण भगवान प्रवेश अहमदाबाद में गाने-बजाने के साथ पूर्ण हुआ । अहमदाबाद के सत्संगी लोगो के खुशी की सीमा नही थी । पूरे शहर में कोने-कोने मिश्री बाँटी गयी । आनंद की लहर छा गयी ।

तत्पश्चात कलेक्टर ने अपने प्राण रक्षक प्रभु की सेवा में अहमदाबाद में जमीन स्वीकार करने का आग्रह किये । प्रभु ने कालुपुरमें नवावास के पास खाली जमीन पर घोडी दौडाकर जगह का चयन किये । नियमानुसार लंदन तक आवेदन कलेक्टर ने किया ''यावत् चंद्र दिवाकरौ'' भूमि का स्थायी निबनधन होग या । बाद में संतो की धर्मशाला तथा तीन शिखर वाला विशाल दिव्य मंदिर बना जो स्वामिनारायण सम्प्रदाय का कर्व प्रथम मोक्ष प्राप्ति का धाम बना । उसमें श्रीहरिने संवत १८७८ में फाल्गुन सुद-३ के दिन अपने हाथो से श्री नरनरायणदेव की उल्लास पूर्वक स्थापना किये । उसी प्रकार श्री राधाकृष्णदेव तथा श्री धर्मभक्ति हरिकृष्ण महाराज की स्थापना किये थे । अहमदाबाद में ऐसा धाम बनाने में सहयोग करने वाले अंग्रेज कलेक्टर एन्ड्रयू डनलोप अपने सम्प्रदाय के ईतिहास में अमर हो गये ।

मित्रो ! हम भी इस बात को स्थायी याद रखे । जब-जब कालुपुर मंदिर में श्री नरनारायणदेव के दर्शन के लिये जाये । इस अमर इतिहास को याद रखे । तथा जीवन को धन्य बनाये ।

•

### सुखका मार्ग

– नारायण वी. जानी ( गांधीनगर )

बाल मित्रो ! आईये जय स्वामिनारायण । आप सभी को ज्ञात ही है कि अभी थोडे दिन पहले अपने आराध्य देव श्री स्वामिनारायण भगवान के द्वारा लिखी गयी शिक्षापत्री का जन्म दिवस था ? किस दिन था आप को ज्ञात है ? माधसुद-५ ( वसंत पंचमी ) यही शिक्षापत्री का जन्म दिन है ।

एक अति लधु ग्रन्थ मे मानव किस प्रकार सच्चे सुख के साथ जीवन व्यतीत कर सके उसके लिये आज्ञा की गयी है । किसी भी मनुष्य के लिये यह अमूल्य निधिहै । आज आप से ऐसी बात करनी है । जिससे आप को शिक्षापत्री का महत्व ज्ञात होगा । श्रीजी महाराज की आज्ञानुसार प्रतिदिन शिक्षापत्री का वाचन करे और अपने जीवन सुखमय बनाये ।

यह बात सवा सौ से १५० वर्ष पुरानी है । उस समय अपने देश में अंग्रेजो का शासन था । छोटे-बडे

तहसील राज के अधिकारी के उपर अंग्रेज देखभाल करते थे। एक अंग्रेज अधिकारी की नियुक्ति जामनगर जिले के जोडिया तालुका में हुई है। उन्हे भूमि मापन का कार्य दिया गाय था । वे अपना निवास स्थान जोडिया गाँव में रखे थे।

प्रातः काल उठकर जोडिया से निकलकर तालुका के गाँव में जाकर जमीन की माप करके घूप लगने से पूर्व अपने निवास पर आ जाते थे।

प्रातः ये अंग्रेज जोडिया तहसील के जीरागढ गाँव में गये । प्रातःकाल किसान अपने बैल की जोडी को लेकर अपने खेत में जाते है। किसान खेत में जा रहे थे । इतने में अंग्रेज अधिकारी आ गये । अंग्रेज का परिधान देखकर बैल भडक गये । गाडी पर बैठा किसान होंशियार था । उसने बैलो पर नियन्त्रण कर लिया। अच्छे बैलो को देखकर अंग्रेज खुश हो गया। उस दिन जीरागढ में मापन करके वहाँ से आ गये। दूसरे दिन प्रातः जोडिया गाँव में आये। वहाँ पर भी जीरागढ गाँव की तरह अनुभव किये। तीसरे दिन घुडकोट गाँव में गये । वहाँ पर भी ऐसा अनुभव किये । अंग्रेज को यह आश्चर्य जनक बात लगी। स्वस्थ बैल तथा किसान के मस्तक पर तिलक चांदला देखकर खुश हुए। इस प्रकार जोडिया तालुका के आठ-दस गाँवो में अनुभव किये।

दस से पन्द्रह दिन में जोडिया तालुका के सभी गाँवो के जमीन का मापन हो गया। अब दूसरे तालुका में जाना था। वहाँ पर भी प्रातः निकले लेकिन बैल भड़के नही। इतना ही नही बैल अति कमजोर थे। गाडी सवार भी कृषकाय दिखाई दिये।

वह आश्चर्यचकित होकर इन किसानो से पूछे। जीरागढ, घडुकोट, जोडिया तालुका के बैल ताकवर तथा किसान भी तेज वाले थे । क्यो यहाँ के बैल कमजोर है ? किसान बोले ! जोडिया तालुका के अधिकतर किसान स्वामिनारायण भगवान के भक्त है। उनके बैल स्वस्थ तथा किसान भी सुखी है। तीन चार गाँव से पता चल गया।

इससे अंग्रेज के मन में उत्सुकता पैदा हुई । स्वामिनारायण भगवान के सभी भक्त सुखी है। उनके बैल भी स्वस्थ है। उसके मन में विचार आया कि इन सभी को स्वामिनारायण भगवान का भक्त बना देना चाहिए। ये विचार अपने अधिकारी के पास उन्होने रखा। यहाँ तक कि आदेश हो कि ऐसा शासनादेश पारित हो कि जामनगर जिले के सभी किसान स्वामिनारायण भगवान के भक्त बने।

अधिकारी उसे समझाते हुए बोले कि स्वामिनारायण सम्प्रदाय में आने के लिये शासनादेश की पारित क्रिया जा सकता है। यह प्रत्येक की ईच्छा की बात है। उनको विचार आया कि इस सम्प्रदाय का पालन करने वाले सुखी है उसका कारण तो ज्ञात नही है। वे सम्प्रदाय के आश्रितो से जानकारी प्राप्त किये। किसी ने उन्हे शिक्षापत्री दिया । उसका अनुवाद कराके पढे तो उनका अध्ययन शिक्षापत्री के इस श्लोक पर गया।

गृहस्थ सत्संगी को उसे अपनी आवश्यकतानुसार घर में जितनी आवश्यकता हो उतने द्रव्य और अन्न का संग्रह करना चाहिए। गृहस्थ को पशु-अनुसार चारा संचय करना चाहिए।( १४१ )

गाय, बैल, भैंस, घोडा आदि जिस पशु की आवश्यकात हो उसको भोजन देकर रखे । भोजन न होने पर पशु न रखे, शक्ति के अनुसार चारे का संग्रह करे ।( १४२ )

ये दो श्लोक पढकर गरीबी तथा बैलो की स्थिति का ज्ञान हो गया । अंग्रेज अधिकारी शिक्षापत्री अपने पास रखता था। आवश्यतानुसार पाठन करता था।

शिक्षापत्री में प्रभु की आज्ञा अद्‌भूत है । उनके आश्रित सुखी हो सके उनके लिये कई सूक्ष्म विषयो को समाहित किये है । इन सबको सही अनुभव अंग्रेज साहब, सत्संगि तथा बैलो को देखकर पता चल गया था ।

मित्रो ! हम सब भाग्यशाली है कि हम लोगो को ये परमकृपालु परमात्मा का सत्संग सच्चे संतो का मिलन, धर्मकुल का साथ मिला है। तो हम भी इस शिक्षापत्री के महत्व का अनुसरण करे। तथा जीवन को सफल बनाये।

# ॥ भक्तिसुधा ॥

**(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) ऐकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "आत्मा ज्ञान होना अतिआवश्यक है"**

**( संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर )**

हम कितने भी ज्ञानी हो तो भी आत्मज्ञान होना चाहिए । जब तक 'आत्मज्ञान' नही होगा तब तक सच्चा ज्ञान नही प्राप्त होगा । शास्त्रज्ञानी और आत्मज्ञानी में अन्तर होता है । जिस व्यक्ति को 'आत्मज्ञान' प्राप्त हुआ होता है । उसके कुछ लक्षम यहाँ पर समझाने का प्रयास करेगे ।

( १ ) 'शर्म' और 'दम' अर्थात् ईन्द्रियो को अपने केन्द्र में स्थिर रखकर और मन को बर्हिमुख न होने दे । तो अपनी जो कर्मेन्द्रियो है वह ''बाह्य'' साधन है । उदाहरण स्वरुप हम आँख को ले तो हम इससे संसार को देखेत है। ''नैत्र'' बाह्य साधन है । तो उसका अंदर का कार्य है । दर्शनेंन्द्रिय का । आंतरिक इन्द्रिय कारयशील न होने पर कार् यनही होता है । आंतरिक इन्द्रिय अर्थात् मस्तिक में जो ज्ञ्न केन्द्र है उन्ही ज्ञान इन्द्रियो में सब कुछ होता है । नेत्रहीन व्यक्ति जब सोचता है तो उसेक मस्तिष्क में कुछ चित्र वो बनता होगा । कई लोगो की बाह्य ईन्द्रिय आँख दिखाई देती है । लेकिन आन्तरिक इन्त्रिय के कार् यन करने पर कुच दिखाई नही देता है । हम जब अनद्र विचार करते है तो कभी-कभी बाह्य जात प्रभाव नही दिखाई देता है । उदाहरण में मैं यहाँ पर बात कार तो 'बाह्य' आंतरिक इन्द्रिय और मन तीनो कार्यशील है . कईबार जब हम आँख बंद करते है । और मन में विचार करते है । तो आंतरिक इन्त्रिय से देखते है । कभी अपने विचार अनुसार चित्र देखते है तो कभी सपने बिन देखा चित्र देख लेते है । ये आंतरिक इन्द्रिय कार्य कती है । आंतरिक और बाह्य इन्द्रियो को केन्द्र में रख कर मन को बर्हिमुख न होने दे । इसके लिये प्रयास करना पडता है ।

( २ ) तितिक्षां : अर्थात सहनशलीता ऐसे देखे तो दोनो एक समान लग रही है । लेकिन दोनो में अन्तर है । तितिक्षा अति कठिन है । दुःखी होकर सनह करे ये सहनशीलता है । अपने अनुसार नही है । हमरो बारे में कोई कुछ कहे हम विचार करे हमें उत्तर नही देना है । और मन में सामने के प्रति कुछ बोल जाये । या सामने वाले प्रति कोई अभिप्राय बन जाये । या तो सामने वाला हमने ताकवर हो । वहाँ हम बोल नही पाते वह क्रिया हमसे ताकतवर हो । वहाँ हम बोल नही पाते वह क्रिया सहनशलीता है । ये अच्छे गुण है । लेकिन तितिक्षा उससे परे की बात है । कुछ बभी हो गया हो फिर भी कुछ नही हुआ ऐसा व्यवहार ''निर्लेप'' होकर करना अति कठिन है । ये कार्य आत्मज्ञानी ही कर सकता है । क्योकि उसे अन्दर का दर्शन मिला होता है । वह व्यक्ति रात-दिन व्यक्ति में जड और चेतन दोनो अलग देखता है । आत्मा और प्रकृति दोनो अलग दिखाई देते है । और ख्याल में आत्मा हमेशा शुध्ध ही होती है । ऐसा व्यवहार करता है कि यह प्रकृति का भाग है । जिस व्यक्ति को आत्म ज्ञान हो जाता है । तो उस व्यक्ति में करुणा, सहज क्षमा, वितरागता, शुध्ध प्रेम ये सब प्रयोग में आ जाते है . यह अंर से निर्लेप रहता है ।

( ३ ) उप्रतिः अर्थात् बाह्य जगत में कितनी भी भौतिक सुविधा हो, प्राप्त भी करें, फिर भी अंदर कोई भाव न आये । बडी सिध्धि मिल जाये । लोग प्रशंसा करे । बाहर में् च्छे से अच्छा पदार्थ प्राप्त हो तो भी ग्रहण न करे । ''वह निर्लेप अवस्था में रह लेता है । क्योकि ? आत्मज्ञानी सदेव ध्यान में रखते है कि मैं ''आत्मा'' तथा मेरी काया अविनाशी है । जो बाहरी जगल से मिल रहा है

। यह व्यवहार है । और विनाशी है । और विनाशी वस्तु से अविनाशी सुख कभी नही मिलता है।

( ४ ) श्रद्धा और समाधान : श्रद्धा अर्थात् अपने धर्म के उपर अपने ईश्वर के उपर सम्पूर्ण विश्वास हो उसे श्रद्धा कहते है । 'श्रद्धा' और 'समाधान' अपने चित्त भगवान में स्थापित करने का प्रयास करना है।

( ५ ) मुमुक्षुत्व : 'मुमुक्षुत्व' अर्थात अंदर से सतत मुक्त होने की तीव्र उत्कृष्ट इच्छा, जैसे हम एक कमरे में अंदर हो और उसमें आग लग जाने पर आप की बुद्धि सतत विचार करेगे कि कैसे घर में से निकले ? हमे सतत मुक्त होने की अंदर की तीव्र इच्छा उसे मुमुक्षुत्व भाव कहते है।

( ६ ) नित्य, अनित्य का विवेक : नित्य, अनित्य का विवेक अर्थात क्या 'शाश्वत' है । क्या नश्वर है ? इसका अतंर का ज्ञान होना चाहिए । जगत सतत अस्थिर और परिवर्तनशील है। नित्य एक भगवान ही है। ये सब 'आत्मा' ज्ञान आ जाये तो अपना शास्त्र पढने से ज्ञानी बन सकते है। ''आत्मज्ञानी'' होने के लिये अपनी आत्मा की पहचान आवश्यक है । हमारी आत्मा सदैव ''शुद्ध'' होती है । पूर्ण भी है। माया रुपी आवरण से ढका हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति में ''ईन्द्रियातीत'' होने की शक्ति है । अपनी आत्मा को पहचानने का प्रयास करना चाहिए । प्रत्येक ज्ञानी आत्मा ज्ञानी हो ऐसा नही होता है । लेकिन अपने कल्याण हेतु आत्मज्ञानी होना आवश्यक है।

संसार में अति धनवान हो, उसके पास वह विमान ही है कि सीधे अक्षरधाम तक जा सके । आपको विमान एक जगह से दूसरी जगह ले जा सकता है। आप कितने भी ज्ञानी हो, लेकिन भलाई किसमे है । तो ग.प्र.प्र. के ३१ वचनामृत में योगानंद मुनिने पूछा है कि 'हे महाराज जो प्रभु के भक्त है उसमें अवगुण नही आता है। जो हरिभक्त होते है उसमे अवगुण आता है क्या ?'' बाद में श्रीजी महाराज बोले कि छोटा-बडा भगवान को निश्चय करके तथा उनके आज्ञा का पालन करके बनते है । खराब व्यवहार करने वाला बडा होकर भी निम्न होता है।

इस लिये भगवान के स्वरुप में निश्चय रहे और स्वरुप की आज्ञा में रहे। निश्चय जितना प्रबल होगा उतना आगे बढेगे । जितना कमजोर होगा उतना बिलम्ब से आगे बढेगे।

यहाँ के 'आँगन' में बच्चे खेल रहे है। जो पहले सडक पर भीख माँग रहे थे । तो इनका कभी का प्रारब्धरहा होगा । भगवान के साथ कही सम्बन्धहोगा । प्रारब्धहोने के कारण हम लोग आज यहाँ इकट्ठे हुए है । इसलिये अक्षरधाम में एक साथ रह सके ऐसा बनने का प्रयास करे । वहाँ जाने के लिये योग्य बनना है। ऐसा मन में रखे और प्रयास भी करे । शेष एकादशी की सभा तो स्थापी रुप से चलेगी। हम रहे या न रहे फिर भी यह सभा चलती रहेगी। स्थायी रुप से सभी के माध्यम से धाम में रह सके । ऐसा शुद्ध आचरण रखना है । महाराजने हमे जो 'बुद्धि' बल और विवेक दिये है । उसका उपयोग 'आत्मसुख' प्राप्त कर सके उसके लिये करना है।

**श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय का गौरव**

आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा प्रस्थापित तथा प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से जेतलपुर मंदिर द्वारा संचालित श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय के चार तेजस्वी बालक एवार्ड प्राप्त किये है।

गुजरात राज्य द्वारा संस्कृत भाषा के संवर्धन के लिये श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना हुई है। जिस में अपने विद्यालय का शर्मा सचिन विश्वनाथनभाई आचार्य कक्षा में रामानुज वेदांत में प्रथम क्रमांक तथा रुपोहित भक्ति वासुदेव शास्त्री कक्षा में प्रथम क्रमांक प्राप्त करके गौरव बढाया है। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान द्वारा आयोजित स्पर्धा में व्याकरण विषय में हरियाणी मयुर महेन्द्रभाई तथा तर्क संग्रह विषय में केशुकुमार झा ने स्वर्ण पदक प्राप्त किये । श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय जेतलपुर धाम के गौरव को बढाये है । प.पू. लालजी महाराजश्री उपरोक्त विद्यार्थीयो की लगातार प्रगति हो ऐसा आशीर्वाद प्रदान किये है।

# सत्संग समाचार

### श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापुनगर) का १५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव भव्यता से मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवकी परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल परिवार के शुभ आशीर्वाद से उसी प्रकार स.गु. महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी की प्रेरणा और स.गु. शा. स्वामी निर्गुणधासजी (असारवा) के मार्गदर्शन से मंदिर का पंचदशाब्दी महोत्सव के रुप में ता. ३१-१-२० से ७-२-२० तक भव्यता से मनाया गया था।

महोत्सव के उपलक्ष्य में एक वर्ष पूर्व निम्नानुसार धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रम पूर्ण हुआ।

धार्मिक : कुल ४३१५६ घंटे 'स्वामिनारायण' महामंत्र मंदिर धुन जिस में कालुपुर मंदिर सहित अपने मंदिर में ७८६ घंटे तथा अगल०बगल के गांवो मे, महोत्सव स्थल, व्यक्तिगत हरिभक्तो के घर को मिलाकर ४२३७० घंटे, १५ करोड "श्री स्वामिनारायण" महामंत्र लेखन, १५२६८ शिक्षापत्री का पाठ, ५०७३०२ जन मंगल पाठ, ५१६४७ श्रीहरि स्मृति का पाठ, १६०४२० बंदु सहजानंद रसपुर का पाठ, भक्त जनो द्वारा १७०००० दंडवत, ५३०००० प्रदक्षिणा, ७११२४५ माला, बापुनगर और ग्राम्य विस्तार मिलकर संतो के सानिध्य में ३२ सत्संग सभा, एप्रोच से पदयात्रा १५ कालुपुर तक, १ जेतलपुर तक, म्युजियम तक १, वहेलाल तक १, बस यात्रा द्वारा श्रीहरि स्थापित ९ धर्म दर्शन १३० हरिभक्तो द्वारा २ बाईक रैली जिस में १ बाईक रेली में श्री स्वामिनारायण म्युजियम सहित अहमदाबाद के सभी शिखरबध्धमंदिरो का दर्शन तथा दूसरी रैली में बापूनगर क्षेत्र हरिमंदिर का दर्शन किये । ३ सप्ताह पारायण जिसमें वचनामृत श्रीहरि स्मृति और दंढाव्य देश के लोग आये थे। ३ समूह महापूजा और श्रावण मास में हिंडोला दर्शन कराया गया।

सामाजिक : व्यसन मुक्ति अभियान जिस में ३७४ व्यक्तियो का व्यसन मुक्त किया गया। रक्तदान कैम्प द्वारा १०८ ब्लड बेस का एकत्रीकरण, सर्वरोग निदान केम्प द्वारा २६७ रोगियो का निशुल्क जाँच, जीसीसी (नरोडा रोड) अस्पताल में रोगियो को फल वितरित कियाग या। ४ वृद्धा आश्रम, २, अनाथाश्रम और १ मंदबुद्धि बालको के आश्रम में तथा ४ ग्राम्य विस्तार में भोजन प्रसाद, खीचडी तथा मिठाई का वितरण अप्रुजी (कठलाल) गाँव में ५१ वृक्षो की देखभाल तता ८५ स्वयं सेवको द्वारा श्रीहरि के प्रागट्य भूमि छपैया मंदिर तथा नारायण सरोवर परिसर में साफ-सफाई की गयी थी।

महोत्सव के अर्न्तगत ता. १९-१-२० को विजय स्तम्भ स्थापना के बाद ता. २६-१-२० को राष्ट्र भावना के प्रतीक रुप में शुकन चौराहेपर ध्वजवंदन कार्यक्रम, शाँय ५-३० बजे कालुपुर मंदिर के महंत शा. स्वामी श्रीहरि कृष्णदासजी शा. स्वामी श्री निर्गुणधासजी, एप्रोच, नारायणपुरा आदि मंदिरो के महंत श्री द्वारा उद्घाटन करके बाल नगरी को देखने के लिये खोला गया था। श्रीमद् सत्संगिजीवन ग्रन्थ का सप्ताह पारायण के वक्ता पद पर एप्रोच मंदिर के स.गु. स्वामी हरिकृष्णदासजी व्यास पद पर बिराजकर संगीत के सुरो के साथ आये भक्तो को कथा मृत का पान कराये । पारायण के साथ पोथीयात्रा, घनश्याम जन्मोत्सव, गादी पट्टाभिषेक, रास, आदरज का अन्नकूट आदि उत्सव में मनया गया था। महोत्सव के अर्न्तगत समूह महापूजा शाकोत्सव के माध्यम से १५००० भक्तो ने बैंगन के सब्जी के साथ भोजन किये थे। प्रत्येक दिन ३५०० लोग भोजन प्रसाद ठाकुरजी का चोकलेट, डायफ्रूट, शाकभाजी, फरसाण, दाल, फल फूल और छप्पन भोग अन्नकूट, १५०० किलो फूल से ठाकुरजी की तुला विधिउसी प्रकार प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथ से ठाकुरजी का पंचामृत और केसर जल से अभिषेक आदि कार्यपूर्ण किया गया। कथा के बीच तीर्थो से आये २६० जितने ब्रह्मनिष्ठ संतो को ९० से अधिक सांख्ययोगी माताये आई थई . प.पू. लालजी महाराजश्री आकर सबको आशीर्वाद दिये थे । प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री आकर बहनो को दिव्य सुख दी थी। प्रसंगोचित सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सबको आशीर्वाद प्रदान किये।

कथा के मुख्य यजमान पद पर गं.स्व. काशीबेन अरजणभी साचाणी परिवार, पाटोत्सव के मुख्य यजमान पद पर अ.नि. अमथीबेन प्रहलादभाई पटेल (यु.एस.ए.) परिवार छोटे-बडे सेवाभावी यशस्वी यजमान, कोठारी प.भ. श्री रमेशभाई खीचडीया के सहयोग से श्री नरनारायण युवक मंड आदि भक्तजन तन, मन धन और समय का योगदान देकर शोभा बढाये थे । पूरे महोत्सव का लाईव प्रसारण अपने संस्कृति टी.वी. चैनल के माध्यम से किया गया था । (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

### गामडी गाँव में भव्य शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव तथा जेतलपुरधाम निवासी श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के कृपा से तथा प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा तथा जेतलपुर मंदिर के पू. महंत स.गु.

शा. स्वामी आत्मप्रकासदासजी तथा पू. स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा के दिन जेतलपुर धाम के संत मंडल द्वारा भव्य शाकोत्सव किया गया था । सभा में पू. महंत स्वामी और ब्र. शा. हरिस्वरुपानंदजी कथा को सुनाकर आशीर्वाद प्रदान किये । साथ ही साथ यहाँ की ग्राम देवी श्री वाराही माताजी का १४ वाँ वार्षिक पाटोत्सव, अन्नकूट विधिवत पूर्ण हुआ । पू. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी ने आरती उतारी थी । इसके बाद यज्ञ शुरु हुआ । पूरे उत्सव के यजमान प.भ. अतुलभई पटेल ( एडवोकेट ) परिवारने लाभ उठाया था ।( स्वा. धर्मनंदनदास - जेतलपुरधाम )

**श्री स्वामिनारायण मंदिर मीठारवली**

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवकी परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी ( नारायणघाट ) की प्रेरणा से हमारे श्री स्वामिनारायण मंदिर मीठाखली में ता. ५-१-२० को रविवार के सुंदर शाकोत्सव मनाया गया । स्वामीने भगवान श्रीहरि के महात्म की महिमा बताये थे । ६०० जितने हरिभक्त शाकोत्सव का प्रसाद लेकर धन्य हुए । प्रत्येक एकादशी को मीठाखली मंदिर में सभा का आयोजन होता है । ( कोठारी हर्षिव ठक्कर )

**श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (वांटो) पाटोत्सव**

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवकी परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर डागंरवा ( वांटो ) का वार्षिक पाटोत्सव महावद-८ ता. १६-२-२० के दिन मनाया गया था । ठाकुरजी का अन्नकूट हरिभक्त अपने घर से सुंदर मिठाई इत्यादि बनाकर भगवान को अन्नकूट रखे थे । प्राप्त: २ घंटे तक महाधुन किया गया था । हरिभक्त ठाकुरजी का दर्शन करके धन्य हुए । ( कोठारीश्री डांगरवा( वांटो )डांगरवा )

**श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा**

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवकी परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. महंत शा. पी.पी. स्वामी ( गांधीनगर ) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा में बिराजमान ठाकुरजी का ३८ वाँ पाटोत्सव ता. १-२-२० के दिन विधिवत मनाया गया । इस अवसर पर पू. महंत शा. पी.पी. स्वामी, स.गु. शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी ( गांधीनगर ), शा. व्रजभूषणदासजी और नारायणघाट मंदिर के महंत शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी आदि संत मंडल ने महापूजा, अन्नकूट आरती करके सभी हरिभक्तो को भगवान के सुंदर गुणो को समझाये थे । कोठारी परिवार यजमान पद का लाभ लिया था । ( नाराणभाई पटेल )

**भीमपुरा (माणसा) श्री स्वामिनारायण मंदिर**

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवकी परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से भीमपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज आदि देवो का १२ वाँ वार्षिक पाटोत्सव विधिवत रुप से मनाया गया था । स.गु. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी ( गांधीनगर ) तथा स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी ( कोटेश्वर ) आदि संतोने ठाकुरजी को अन्नकूट करके आरती किये थे । कथा-वार्ता सुनाकर हरिभक्तो को लाभ दिये । पाटोत्सव के यजमान अ.नि. वेलजीभाई चौधरी परिवार था ।( विष्णुभाई चौधरी )

**धरमपुर (गांधीनगर) मंदिराक तिसरा पाटोत्सव**

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद तथा स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी ( गांधीनगर ) की प्रेरणा-मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायणम ंदिर धरमपुर में विराजमान ठाकुरजी का तीसरा पाटोत्सव ता. १७-२-२० के दिन भव्यता से मनाया गया था । इस अवसर पर कालुपुर मंदिर के पू. महंत स्वामी और संत मंडल आकर आशीर्वाद प्रदान किये थे । भगवान श्रीहरि का अभिषेक-अन्नकूट करके आरती उतारी गयी थी । शाकोत्सव का भव्य आयोजन किया गया था । गाँव के सभी हरिभक्तोने लाभ उठाये थे । ( घनश्यामसिंह राणा - गांधीनगर )

**श्री स्वामिनारायण मंदिर ईश्वरपुरा (बदपुरा) गाँव में कथा**

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवकी परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी ( गांधीनगर ) की प्रेरणा से ईश्वपुरा ( बदपुरा ) गाँव में ता. १७-२-२० से ता. २०-२-२० तक प.भ. जेसंगभाई वेलजीभाई चौधरी परिवार के तरफ से त्रिदिवसीय कथा स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी ( कोटेश्वर ) के वक्ता पद से हुई थी । अवसर पर पू. महंत शा. पी.पी. स्वामी, पू. महंत स्वामी ( कालुपुर ) आदि संतोने आशीर्वाद दिया था ।( कोठारी जयंतीभाई चौधरी )

**श्री स्वामिनारायण मंदिर विजापुर का ५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव**

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवकी परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा गांधीनगर मंदिर के महंत स.गु. शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से महामुक्त वजीबा गाँव का महातीर्थ विजापुर गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर का ५ वाँ पाटोत्सव ता. ७-२-२० से ता. ७-२-२० तक मनाया गया ।पाटोत्सव के अवसर पर वचनामृत त्रिदिवयीस पारायण शा. स्वा. सत्संगिभूषणदासजी ( कालुपुर ), स.गु. शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी ( आदरज ) ने कथा का लाभ दिये थे । श्री स्वामिनारायण समस्त सत्संग

समाज विजापुर और पारायण के मुख्य यजमान प.भ. नटवरभाई कचराभाई पटेल ( भाणपुर ) के हाथ से डॉ. भरतभाई और निलेशभाई पटेल आदि यजमान थे । सभा का संचालन शा. कुंजविहारी स्वामीने किया था । प.पू. लालजी महाराजश्री द्वारा ठाकुरजी का अन्नकूट आरती और शाकोत्सव मनाया गया था । अंत में सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद प्रदान किये थे ।( कोठारीश्री, विजापुर )

**श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरवासण ३०-२९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव (भाईयो एवम् बहनो का)**

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवकी परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी श्री नारायणवल्लभदासजी ( वडनगर ) की प्रेरणा मार्गदर्शन से तथा अ.सौ. पटेल रुखीबेन घनश्यामभाई मणीलाल ( मोखासण ) चि. पटेल मुकेशभाई, चि. संजयभाई अमेरिका आदि परिवार यजमान पद पर श्री स्वामिनारायण मंदिर भाईयो का ३० वाँ और बहनो के मंदिर का २९ वाँ पाटोत्सव और उसके उपलक्ष्य में श्री पुरुषोत्तम प्रकाश ग्रन्थ की त्रिदिवसीय कथा स.गु. शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी ( गांधीनगर ) के वक्ता पद से ता. ७-२-२० से ९-२-२० तक पूर्ण किया गया था ।

ता. ७-२-२० के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री और प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री का आगमन हुआ था । सभी को आशीर्वाद प्रदान किये थे । तीर्थो से आये संतोने अपनी अमृतवाणी का लाभ दिये । यहाँ पर सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम मनाया गया था ।( कोठारीश्री मोखसण मंदिर )

## विदेश सत्संग समाचार

**कोलोनीया मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री का आगमन**

अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर न्यूजर्सी कोलोनिया में १५ फरवरी शनिवार के दिन सायं ५ से ८ बजे के बीच प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप बडे गादीवालेश्री तथा पू. बिन्दुराजा के शुभ सानिध्य में दोनो भानजे श्री सुव्रतकुमार और श्री सौम्यकुमार के जन्म दिन को भव्यता के साथ मनाया गया था । सर्व प्रथम महेशभाई पटेल की संगीत मंडली ने कीर्तन-भजन गाये थे । धर्मकुल ने ठाकुरजी का दर्शन किये थे । सभा में आये थे । प.पू. बड़े महाराजश्रीने यहाँ के २८ मंदिरो की प्रगति तथा सत्संग की सराहना करते हुए आशीर्वाद दिये थे । केक कटिंग के अवसर पर दोनो भानजो को प.पू. बड़े महाराजश्री और पू. बिन्दूराजाने आशीर्वाद दिये थे । हरिभक्तोने प.पू. बड़े महाराजश्री और बहनोने प.पू.अ.सौ. बड़े गादीवालाश्री और बिन्दूराजा का स्वागत किये थे । ठाकुरजी की थाली आरती करके सभीने विदाई लिया था । पूजारी अजयप्रकाश स्वामीने सुंदर प्रबन्धकिये थे । ( प्रविण शाह )

**श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्यूस्टन**

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवकी परम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से अपने वरिष्ठ नागरिक सभी भक्त १५ फरवरी को दो लक्झरी बस में बैठकर अमेरिका में प्रचलित ओस्टिन टेक्सास वरसाने दर्शन हेतु गये थे । मंदिर के हाल में धुन, भजन, कीर्तन सभी भख्तोने किया था ।

अपने ह्यूस्टन मंदिर में प्रातः १० से ३ के बीच रक्त दान कैम्प का आयोजन किया गया था । सुव्रत स्वामी द्वारा कथा कही गयी थी । उत्तरायण पर्व सुंदर पूर्वक मनाया गया था ।

**श्रीमद् भागवत कथा**

अपने ह्यूस्टन श्री स्वामिनारायण मंदिर में त्रिदिवसीय श्रीमद् भागवत कथा आयोजन ता. ३०-१-२० से ता. १-२-२० के बीच शायं ६ से ८ तक किया गया था । सुव्रत स्वामी कथा सुनाये थे । जिसके यजमान उषाबेन प्रवीणभाई शाह, साथ में धीरुबाई पटेल, प्रफुलाबेन, सब यजमान परिवार आये थे । सेवा करने वालो का फूलहार से सम्मान किया गया था । ( प्रविण शाह )

**एलनटाउन वडतालधाम में सत्संग प्रवृत्ति**

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवकी परम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से हमारे हिन्दू श्री स्वामिनारायण मंदिर एलनटाउन में शनिवार सांम ५ से ८ बजे के बीच महंतश्री मुनि स्वामी की प्रेरणा से सुंदर सत्संग हुआ था । जिस में सभी युवक हरिभक्त मिलकर भजन-कीर्तन किये थे । स्वामीने कथा-वार्ता किया था । सभी सेवाभावी यजमान का सन्मान किया गया था ।

अंत में ठाकुरजी की आरती नियम करके सभी प्रसंग लेकर घर गये । सभी हरिभक्त सत्संग का लाभ लेकर कृतज्ञ हुए ।( प्रविण शाह )

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद ( गुजरात ) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद( गुजरात )पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

१. नारणघाट मंदिर के पाटोत्सव अवसर और अभिषेक दर्शन । २. महेसाणा मंदिर के १२वें पाटोत्सव हवसर पर ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन । ३. धोलका मंदिर द्वारा आयोजित शाकोत्सव करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री । ४. करशनपुरा में शताब्दी महोत्सव के सभामें आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।५. दाजपुरमें नूतन मंदिर के खात विधि करते अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री । ६. सीनेमिसन ( अमेरिका ) में शिवरात्री की पूजा । ७. कोटा ( राजस्थान ) में नये यात्रिक भवन छपियाधाम रोड जाते समय यात्रियो को रास्तेमें भोजन एवं रुकने के लिये लाभ हेतु निवेदन ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

श्री नरनारायणदेव का १९८ वाँ पाटोत्सव